# सेवा-पथ

[ तीन अंकों में एक सामाजिक नाटक ]



सेठ गोविंददास

# सेवा-पथ

[ तीन अंकों में एक सामाजिक नाटक ]

लेखक

सेठ गोविंददास

हिन्दी-भवन

लाहौर

१४ जून, १९४० ] [ मूल्य ।।।)

प्रकाशक
धर्मचंद्र विशारद
हिंदी-भवन
लाहौर

मुद्रक
देवचंद्र नारंग
ऐच. बी. प्रेस
लाहौर

# निवेदन

त्रिपुरी कांग्रेस के बाद राजनीतिक क्षेत्र से कुछ दिन के लिए अवकाश ग्रहण करने पर मैंने फ़ुरसत के वक्त फिर से साहित्य-सेवा करने का निश्चय किया।

जेल से छूटे पाँच साल के करीब हो चुके थे। जेल में पढ़ने लिखने के लिए काफ़ी अवकाश मिला था, पर बाहर निकलने के बाद बिलकुल ही नहीं।

मैंने पहले अपने अप्रकाशित नाटकों में से कुछ को दोहराना चाहा। 'सेवा-पथ' को सबसे पहले मैंने हाथ में लिया।

मुझे हर्ष है कि नागपुर जेल में करीब छै वर्ष पहले लिखा हुआ और गत अगस्त मास में संशोधन किया हुआ यह नाटक अब पुस्तकाकार प्रकाशित होने जा रहा है।

'माधुरी' में यह नाटक गत दिसंबर, जनवरी और फ़रवरी मास में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था।

गोपाल बाग
जबलपुर
२१ मई, १९४०

गोविंददास

# पात्र, स्थान और समय

## मुख्य पात्र

### पुरुष

दीनानाथ—एक निर्धन युवक ।

श्रीनिवास—एक धनवान युवक ।

शक्तिपाल वर्मा—वकील, पीछे से बैरिस्टर, पीछे से मिनिस्टर ।

### स्त्री

कमला—दीनानाथ की पत्नी ।

सरला—श्रीनिवास की पत्नी ।

मार्गरेट—शक्तिपाल की अँगरेज़ पत्नी ।

## अन्य पात्र

मिनिस्टर के सेक्रेटरी, सेठ, ज़मींदार, ट्रेड यूनियन का सेक्रेटरी, पारसी, बंगाली, पंजाबी, मराठा, युवक, बच्चे, चपरासी, नगर-निवासी आदि ।

## स्थान

एक नगर

## समय

१९२२ ई० से १९२९ ई० तक

# सेवा-पथ

## पहला अंक

### पहला दृश्य

**स्थान**—श्रीनिवास के मकान का एक कमरा।

**समय**—संध्या।

[ कमरा पुराने रईसों के बैठकख़ाने के सदृश सजा है। तीन ओर दीवालें हैं। दीवालें और छत ( सीलिंग ) पीले तैल रंग से रँगी हुई हैं, जिस पर रंग-बिरंगे बेल-बूटे हैं। पीछे और दोनों ओर की दीवालों में अनेक दरवाज़े और खिड़कियाँ हैं, जिनके किवाड़ों में काँच लगे हैं। अनेक दरवाज़े और खिड़कियाँ खुली हुई हैं, जिनमें से बाहर के उद्यान का कुछ भाग दिखाई देता है, जिसे डूबते हुए सूर्य की किरणें रँग रही हैं। कमरे की ज़मीन पर मिर्ज़ापुरी ऊनी ग़लीचा बिछा है। ग़लीचे पर गद्दा और मसनद लगे हुए हैं। गद्दे पर मसनद से टिका हुआ श्रीनिवास बैठा है। उसके हाथ में खुला हुआ 'लीडर' पत्र है।

श्रीनिवास की दाहनी ओर शक्तिपाल बैठा है और उसके कंधे के सहारे झुका हुआ पत्र को देख रहा है। बाईं तरफ़ दीनानाथ बैठा हुआ है। उसकी दृष्टि भी पत्र पर ही है। तीनों ही युवक हैं, अवस्था २३ और २४ वर्ष के बीच में है। श्रीनिवास गौरवर्ण का कुछ लंबा और दुबला सुंदर व्यक्ति है। छोटी-छोटी नोक कटी ( बटर फ़्लाई ) मूछें हैं। शेरवानी तथा चूड़ीदार पाजामा पहने हुए नंगे सिर है। बाल अँगरेजी ढंग से कटे हैं। शक्तिपाल साँवले रंग और सामान्य ऊँचाई एवं शरीर का मनुष्य है। मूछें मुड़ी हुई हैं। कपड़े अँगरेज़ी ढंग के हैं। उसका सिर भी नंगा है। लंबे बाल उलटकर सँवारे हुए हैं। चश्मा लगाये हुए है, पर चश्मा सिर पर चढ़ा हुआ है। दीनानाथ साधारण-तथा सुंदर कुछ ठिंगना, दुबला-पतला गेहुँए रंग का आदमी है। छोटी-छोटी मूछें हैं। खादी की लंबी क़मीज़ और उस पर खादी के चारखाने का खुले गलेवाला छोटा कोट पहने है। कोट के नीचे क़मीज़ लटक रही है। खादी की मोटी धोती है। सिर पर गांधी टोपी है ]

श्रीनिवास—**हलो, शक्तिपाल, फ़र्स्ट डिवीज़न, फ़र्स्ट इन लॉ इन दि होल युनिवर्सिटी ! मोस्ट क्रेडिटेबल इंडीड ! माई हार्टी कांग्रेच्युलेशंस !**

दीनानाथ—**हाँ, हाँ, अनेक बधाइयाँ।**

शक्तिपाल—**( मुसकराते हुए ) मैं तो एल्-एल्० बी० में फ़र्स्ट आया, पर दीनानाथ, तुम तो एम्० ए० में फ़र्स्ट आये थे। एल-एल० बी में फर्स्ट आने के बनिस्बत एम्० ए० में युनिवर्सिटी-भर में फ़र्स्ट आना कहीं ज़्यादा क्रेडिटेबल है। वह तो तुमने पढ़ना**

छोड़कर नान-कोआपरेशन मूवमेंट ज्वाइन कर लिया और जेल चले गये, नहीं तो एल्-एल्० बी० में मैं नहीं, पर तुम फ़र्स्ट आते ।

श्रनिवास—हम तीनों में दुःख तो मुझे होना चाहिए। तुम दोनों ने तो हाथ मार दिया। मुझे ही बी०ए० में थर्ड डिवीज़न मिला ।

शक्तिपाल—यह और सुनिए! इतनी बीमारी के बाद भी पास हो जाना कोई .खुशी की बात न हुई और थर्ड डिवीज़न में आना रंज की बात हो गई। फिर, श्रीनिवास, अगर मैं तुम्हारे मुवाफ़िक़ दौलतमंद होता तो पास होना ही मुश्किल था; कहते हैं न कि लक्ष्मी सरस्वती कभी एक साथ नहीं रहतीं, पर तुम में तो दोनों ने साथ-साथ डेरा डाल रक्खा है। (पत्र से हटकर चश्मा सिर से आँखों पर उतारते हुए) दीनानाथ, अब मैं तो डेढ़ साल को विलायत चला। वैरिस्टर होकर १९२३ के मिडिल में लौटूँगा, पर तुम अब क्या करोगे क्योंकि नान-कोआपरेशन तो ख़त्म हो रहा है?

[ चाय का सामान और बिसकुट तथा फल लिये हुए स्वच्छ वस्त्रों में नौकर का प्रवेश। सब वस्तुएँ ग़लीचे पर रखकर प्रस्थान। ]

दीनानाथ—वही जो कुछ दिन पूर्व तुमसे कहा था, ग्रामों में कुछ कार्य करूँगा।

श्रीनिवास—अच्छा, चाय भी तो पीते चलो। (दीनानाथ की ओर संकेत कर) ये तो पीयेंगे नहीं।

शक्तिपाल—अच्छी बात है। (चाय के सामान के निकट

खिसककर ) ऐसे तो तुम जो चाहे कर सकते हो, पर हम दोनों में जो फ्रेंडशिप है, उसके सबब से तुम्हें सलाह देने का मुझको ज़रूर हक़ है।

दीनानाथ—अवश्य, अवश्य !

शक्तिपाल—मैंने तुमको कई दफ़ा कहा है और फिर कह रहा हूँ, तुमने पढ़ना छोड़ उस आधे पागल गाँधी के नाना-कोआपरेशन में शामिल होकर ग़लती की और अब फिर ग़लती कर रहे हो।

श्रीनिवास—मैं भी तुमसे सर्वथा सहमत हूँ। ( चायदानी से चाय प्याले में डालता है। )

शक्तिपाल—न-जाने कितनी मुसीबतें उठाकर तो तुम एम्० ए० हुए, क्योंकि तुम्हारे प्रिंसिपल्स के मारे तो नाकों दम ठहरा; किसी से स्कॉलरशिप न लोगे, किसी तरह की मदद मंज़ूर न करोगे। ( चायदानी से चाय प्याले में डालते हुए ) ट्यूशन कर, पेपर्स में आर्टिकल लिख कॉलेज की फ़ीस चुकाई, किताबों की क़ीमत दी, पेट भरा, घरवालों का गुज़र-बसर चलाया। इतनी मुश्किल से जो पढ़ना जारी रक्खा वह बीच ही में छोड़कर जेल चल दिये, जिसका कोई नतीजा निकल ही न सकता था और फिर वही फाकेमस्ती का रास्ता।

श्रीनिवास—और फिर बेचारी उस पत्नी की ओर देखना भी तो तुम्हारे किसी-न-किसी सिद्धांत के अंतर्गत आता होगा ? ( दूध डालते हुए ) यदि यही कार्य की दिशा रखनी थी तो विवाह क्यों किया था ? ( शक्कर डालता है )

दीनानाथ—कहाँ करता था, भाई, माताजी का ऐसा आग्रह हुआ कि उसे टालना असंभव था।

श्रीनिवास—अब यदि वे स्वर्ग में हैं तो पत्नी की ओर देखना होगा।

दीनानाथ—उसे मैं समझा लूँगा।

शक्तिपाल—पर बात उसे समझाने की है ही नहीं। पढ़ना छोड़ भी दिया है तो तुम प्रोफ़ेसर हो सकते हो। अगर तुम प्रोफ़ेसर हो गये, जो फ़िलासफ़ी में फ़र्स्ट स्टैंड होने के सबब मुश्किल नहीं है, तो तुम्हारे प्रिंसिपल्स में धक्का कहाँ लगता है?

दीनानाथ—यह बात नहीं है, शक्तिपाल! सारा प्रश्न यह है कि जहाँ एक बार पैर में बेड़ी पड़ी कि फिर छुटकारा नहीं; जीवन ही इस प्रकार का हो जाता है कि मनुष्य उसमें परिवर्तन करना चाहे तो भी नहीं कर सकता। सेवा के जिस पथ पर चलने का मैं वर्षों से विचार कर रहा हूँ, वह पथ ही परिवर्तित हो जायगा।

शक्तिपाल—( तैयार चाय पीते हुए ) अच्छा, ज़रा इसी पर बहस हो जाय कि तुम्हारा सोचा हुआ सेवा-पथ ही कहाँ तक दुरुस्त है। देखो, मुल्क की ख़िदमत हम तीनों ही करना चाहते हैं, इसमें तो कोई शक नहीं है न?

दीनानाथ—नहीं।

श्रीनिवास—( चाय पीते-पीते ) इसमें भी कोई संदेह हो सकता है?

शक्तिपाल—फ़र्क सिर्फ़ रास्ते का है।

श्रीनिवास—ठीक ।

दीनानाथ—बराबर ।

शक्तिपाल—तुम्हारा ख़याल है कि अगर आदमी हर तरह से अपनी ख़ुदग़र्ज़ी, जिसे तुम्हारे लफ़्ज़ों में स्वार्थ कहना चाहिए, छोड़ दे, तो बिना सियासी इख़्तियारात और दौलत के भी दुनिया की भलाई, ग़रीबों की ख़िदमत कर सकता है ।

दीनानाथ—ठीक है, पर मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि राजनीतिक अधिकारों और धन की कोई आवश्यकता नहीं है । यदि राजनीतिक-अधिकारों को मैं आवश्यक न समझता तो असहयोग-आंदोलन में क्यों सम्मिलित होता ।

शक्तिपाल—नहीं-नहीं, पर तुम्हारा यह ख़याल ज़रूर है कि बिना सियासी इख़्तियारात और दौलत के भी आदमी दुनिया की भलाई और ग़रीबों की ख़िदमत कर सकता है ।

दीनानाथ—हाँ, और इसी विचार को व्यवहार में लाकर मैं देखना चाहता हूँ कि यह कहाँ तक ठीक है ।

शक्तिपाल—तुम जानते हो मैं कार्लमार्क्स के सोशलिस्ट ख़यालात का हूँ, जो इस मुल्क के लिए बिलकुल नई चीज़ हैं ।

दीनानाथ—जानता हूँ ।

शक्तिपाल—और वह भी मोस्ट माडर्न सोशलिस्ट ख़यालात का, जिनके मुताबिक़ सच्चा सोशलिज़्म रिवोल्यूशन से नहीं, पर इवोल्यूशन और पार्लीमेंटरी तरीक़ों से ही क़ायम हो सकता है ।

दीनानाथ—यह भी जानता हूँ ।

शक्तिपाल—यह भी तुम जानते हो कि आजकल दुनिया में ये ख़यालात सबसे एडवांस्ड समझे जाते हैं ?

दीनानाथ—हाँ, कुछ लोग ऐसा अवश्य समझते हैं।

शक्तिपाल—कुछ लोग नहीं, सभी बड़े-बड़े थिंकर्स।

दीनानाथ—अच्छा, आगे बढ़िए।

शक्तिपाल—तो मेरे ख़याल से जिस रास्ते पर तुमने चलना तय किया है, वह रास्ता सिर्फ़ बेवकूफ़ी का ही नहीं, दुनिया को गड्ढे में डालने का भी है।

श्रीनिवास—यद्यपि मैं तुम्हारे सोशलिस्ट विचारों से सहमत नहीं हूँ, किन्तु दीनानाथ का पथ ठीक नहीं है, इसको मैं भी पूर्ण-तया मानता हूँ। व्यक्तिगत स्वार्थ-त्याग के बिना आनंद से रहते हुए भी मनुष्य देश और जगत् की सेवा कर सकता है।

शक्तिपाल—देखो, दीनानाथ, सबसे पहले तो निस्वार्थता या परमार्थता, जो लफ्ज़, तुम हर वक्त काम में लाते हो, और जिसका गांधी ने सबसे ज़्यादा प्रोपेगैंडा किया है, हमारे मुल्क की हर ज़बान की डिक्शनरी में से निकाल देना चाहिए।

दीनानाथ—यह क्यों ?

शक्तिपाल—( बिसकुट खाते हुए ) इन लफ्ज़ों ने हमारे मुल्क का बहुत बड़ा नुक़सान किया है। नेचर में स्वार्थ है। दुनिया में किसी को भी ले लो, चाहे वह हाथी हो या चींटी, सब स्वार्थ से भरे हुए हैं।

दीनानाथ—निस्वार्थता या परमार्थता ने इस देश को हानि

पहुँचाई है, इस बात को तो मैं नहीं मानता, पर पशुओं में स्वार्थ है, इस बात को मैं मानता हूँ; और इसीलिए मैं कहता हूँ कि जब मनुष्य में स्वार्थ नहीं रहेगा, तभी वह सर्वश्रेष्ठ प्राणी हो सकेगा, जो होने की अभी वह डींग मार रहा है।

शक्तिपाल—सर्वश्रेष्ठ प्राणी हो सकेगा ? अजी, हज़रत, अगर उसने स्वार्थ छोड़ दिया तो वह ज़िंदा नहीं रह सकेगा; आप सर्वश्रेष्ठ प्राणी का ख़्वाब देख रहे हैं।

दीनानाथ—जीवित रहने के लिए जितने स्वार्थ की आवश्यकता है, वह क्षम्य है।

शक्तिपाल—ख़ैर, किसी तरह इतना स्वार्थ ज़रूरी है, यहाँ तक तो तुम आये। अब सवाल रिलेटिव रह जाता है। जिसे तुम किसी का स्वार्थ कहते हो, वह उसकी ज़रूरत हो सकती है।

दीनानाथ—जीवित रहने के लिए नहीं, शक्तिपाल।

शक्तिपाल—सिविलाइज़्ड तरीके से अपनी ज़िंदगी बसर करने के लिए सही।

दीनानाथ—सिविलाइज़्ड तरीके से ज़िंदगी बसर करने का क्या अर्थ है ? इसकी कोई सीमा निर्धारित है ? यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो जहाँ तक आज का सभ्य कहलानेवाला समाज है, और जिस समाज के हाथ में आज किसी प्रकार की भी सत्ता है, उसका स्वार्थ तो दूसरे शब्दों में अहंकार और अत्याचार है।

शक्तिपाल—कैसे ?

दीनानाथ—इन सभ्य कहलानेवाले लोगों का जब कोई भी

स्वार्थ पूर्ण नहीं होने पाता, तब वे अहंकार में चूर हो जाते हैं और फिर अपनी सत्ता का दुरुपयोग कर अत्याचार आरंभ करते हैं। आज संसार में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य, एक जाति दूसरी जाति, और एक देश दूसरे देश को जिस प्रकार लूट रहे हैं, दूसरों को दुखी कर अपने आधिभौतिक सुखों को बढ़ा रहे हैं, सहस्रों और लाखों मनुष्यों को निर्धन बना, दुखी बना, एक मनुष्य जिस प्रकार धनवान बन रहा है, यही क्या सभ्य रीति से जीवन व्यतीत करना कहा जा सकता है ?

शक्तिपाल—इस हालत की तब्दीली निहायत ज़रूरी है, यही तो सोशलिज़्म कहता है, पर वह निस्वार्थता के बिना पर नहीं, बल्कि इसलिए कि हज़ारों और लाखों आदमियों की ग़रीबी से सभी को नुक़सान होता है। ग़रीबों की ज़िंदगी, उससे बीमारियों के एपिडमिक, उनकी बुरी आदतें और तरह-तरह के झगड़ों से सभी का नाकों दम है। (चाय पीते हुए) दुनिया में जो सबसे बड़े अमीर हैं, उनके मुवाफ़िक़ अगर दुनिया में रहनेवाले सब बना दिये जा सकें तो सोशलिज़्म सबको वैसा ही अमीर बना देना पसंद करेगा।

श्रीनिवास—यह असंभव है।

शक्तिपाल—इस लिए अमीरी और ग़रीबी का जिस प्रापर्टी के सबब डिस्टिंक्शन रहता है, वह प्रापर्टी ही किसी की न रह कर सरकारी हो जावे, नेशनलाइज़ कर दी जावे, और सबकी आमदनी बराबर तक़सीम कर दी जाय, साथ ही इस काम में दुनिया की सब सरकारें आपस में कोआपरेशन करें, वह इस फ़िराक़ में है। यह

तुम्हारे स्वार्थ छोड़ने और ग़रीबों की ख़िदमतवाले सेवा-पथ से तो नहीं हो सकता। जिस बुरी हालत का तुमने बयान किया, वह तुम्हारे रास्ते से तो नहीं मिट सकती। अरे ग़रीब तो ख़िदमत करने की नहीं, नफ़रत करने की चीज़ है।

दीनानाथ—और यह सोशलिज़्म तुम इस देश में वैध उपायों से स्थापित करना चाहते हो, क्योंकि क्रांतिकारी उपायों के तो तुम विरुद्ध हो ?

शक्तिपाल—बेशक, क्योंकि इस मामले में रिवोल्यूशन कभी कामयाब हो ही नहीं सकता। अभी क़रीब चार साल पहले सन् १९१८ में रशा का जो रिवोल्यूशन हुआ, और जिसकी अब कुछ ख़बरें आने लगी हैं, वह भी फ़ेल हो गया, वहाँ की सब प्रापर्टी नेशनलाइज़ न हो सकी, और न आमदनी ही बराबर तक़सीम हो सकी।

दीनानाथ—तो यह सब तुम इस देश की इन्हीं कौंसिलों द्वारा करना चाहते हो, जो अभी लगभग दो वर्ष पूर्व मांटफोर्ड रिफ़ॉर्म्स द्वारा इस देश को दी गई हैं।

शक्तिपाल—मुझे मालूम हो गया कि आप बहस में मुझे किस तरफ़ ले जा रहे हैं; अब आप कहेंगे कि इन कौंसिलों को इख़्तियारात ही क्या हैं ?

दीनानाथ—निस्संदेह।

शक्तिपाल—मैं भी यह जानता हूँ, और थोड़ी देर को समझो कि इनको इख़्तियारात भी हो जायँ और यहाँ सोशलिज़्म क़ायम

भी हो जाय, तो भी वह जब तक तमाम दुनिया में, या कम-से-कम दुनिया के ज़्यादातर हिस्सों में, क़ायम न हो जायगा, तब तक परमानेंट नहीं हो सकता।

श्रीनिवास—क्यों ?

दीनानाथ—क्योंकि बाक़ी के मुल्क एक मुल्क में उसे क़ायम नहीं रहने देंगे। इसलिए यह मसला केवल इस मुल्क का ही मसला नहीं है, वरन् तमाम दुनिया का मसला है। हमारी कौंसिलों को इख़्तियारात हैं या नहीं, यह सवाल ही नहीं उठता। (चाय का प्याला रख, फल खाते हुए) इस वक्त तमाम दुनिया में सोशलिज़्म क़ायम करने की कोशिश हो रही है और जब वह दुनिया के के मुख़्तलिफ़-मुख़्तलिफ़ हिस्सों में क़ायम हो जायगा, इँगलैंड में क़ायम हो जायगा, तब हमारे यहाँ न हो, यह ग़ैरमुमकिन है।

दीनानाथ—और जब तक यह नहीं हो जाता, तब तक क्या किया जाय ?

शक्तिपाल—इन्हीं कौंसिलों के ज़रिये जितनी उस तरफ़ को बढ़ने की कोशिश हो सकती है, उतनी करने के सिवा और क्या किया जा सकता है, क्योंकि यह ज़ाती स्वार्थ छोड़ना और इससे ग़रीबों की सेवा का तुम्हारा रास्ता बिलकुल फ़िज़ूल है। फिर फ़िज़ूल है इतना नहीं, जैसा मैंने कहा था दुनिया को गड्ढे में डालनेवाला है।

दीनानाथ—यह किस प्रकार ?

शक्तिपाल—तुम इन ग़रीबों की ख़िदमत करके इनको उलटा

निकम्मा और अलाल बना दोगे और इस तरह इस स्वार्थ छोड़ने से उलटा स्वार्थ पैदा करोगे। ये निकम्मे और अलाल आदमी और ज़्यादा स्वार्थी हो जायँगे।

दीनानाथ—ठीक है, संसार में जब तक सोशलिज़्म की स्थापना न होगी, तब तक धनवानों को निस्वार्थ होने की आवश्यकता नहीं। उनकी लूट तथा अत्याचार उसी प्रकार चलता रह सकता है और जो थोड़ा-बहुत स्वार्थ त्याग कर दीन-दुखियों की सेवा करे, वह तुम्हारे मत में निरर्थक काम है; वरन् संसार को गड्ढे में डालनेवाला है। धनवानों की लूट से तब तक संसार की हानि न होगी, पर स्वार्थत्यागियों की सेवा से हानि हो जायगी। क्षमा करना, भाई, यदि मैं यह कहूँ कि तुम्हारे इस मत से मैं सहमत नहीं हूँ। कम-से-कम जब तक संसार में सोशलिज़्म की स्थापना होती है, तब तक तो मुझे अपने स्वार्थ-त्याग के सेवा-पथ पर चलनेवालों की आवश्यकता जान पड़ती है। जब तक दीन-दुखी हैं, तब तक तो मैं उन्हें प्यार ही करता हूँ, घृणा नहीं कर सकता।

शक्तिपाल—तो अब आप अपने स्वार्थ-त्याग और ग़रीबों की सेवा से दुनिया को सुखी कर देंगे। ब्रेवो! दीनानाथ, ब्रेवो! थ्री चियर्स फ़ार मिस्टर दीनानाथ एम० ए०! हिप हिप हुर्रे। (ज़ोर से हँस पड़ता है; श्रीनिवास भी हँसने में साथ देता है)

श्रीनिवास—(जो चाय पी चुका है और फल खारहा है) अरे छोड़ो ये बातें, दीनानाथ, कहाँ की सनक सवार हुई है? मैंने तो अब तक दो विद्वानों के संवाद में बोलना ही उचित नहीं

समझा। मेरे मतानुसार तो तुम दोनों ही स्वप्न देख रहे हो। न तो संसार में सारी संपत्ति नेशनलाइज़ होकर भिन्न-भिन्न सरकारों का सहयोग हो सब की आय बराबर हो सकती है और न निस्वार्थता का साम्राज्य ही हो सकता है। यह जगत् सदा से जैसा रहा है, वैसा ही आज है, और वैसा ही सदा रहेगा। कभी-कभी कुछ सनकी उत्पन्न हो जाते हैं, कुछ दिन चहल-पहल मचती है और फिर सब जैसा का तैसा। गांधी और लेनिन उन्हीं सनकियों में हैं। धनवान भी रहेंगे, निर्धन भी रहेंगे। किसी को सुख रहेगा, किसी को दुःख रहेगा। कोई आनंद में रहेगा कोई कष्ट में।

शक्तिपाल—सोशलिज़्म के बाद नहीं।

श्रीनिवास—वह तो देखना है, पर हाँ सहस्रों और लाखों के कष्ट पाने का कोई अर्थ नहीं है। प्रत्येक मनुष्य के एक ही शरीर है और जितना एक शरीर को कष्ट हो सकता है, उतना ही संसार में है, उससे अधिक नहीं। अब रही धनवानों की बात सो, शक्तिपाल भी संसार में धनवानों को नहीं चाहते और तुम तो चाहते ही नहीं हो। पर तुम दोनों एक बात भूल जाते हो कि जिस दिन संसार में धनवान न रहेंगे, उस दिन संसार की सारी सभ्यता समाप्त हो जायगी।

शक्तिपाल—यह क्योंकर ?

श्रीनिवास—सभ्यता वैज्ञानिक आविष्कारों और ललित कलाओं पर निर्भर है। ये दोनों बातें पूँजी पर अवलंबित हैं, और पूँजी धनवानों पर। यदि सब की आय आपस में बट गई, या दीनानाथ

के शब्दों में धनवान लोगों को न लूट सके तो वैज्ञानिक आविष्कारों अथवा ललित कलाओं के लिए पूँजी कहाँ से आएगी ?

शक्तिपाल—तुम्हारी इन दोनों बातों का सोशलिज़्म के पास जवाब है।

श्रीनिवास—उत्तर संसार में किस बात का नहीं होता, पर मैं वाद-विवाद करना ही नहीं चाहता। जब तुम दोनों में बातें चल रही थीं, तब मैं चुपचाप बैठा था। ( सिगरेट जलाते हुए ) मैं तो ( माचिस बुझ जाती है अतः दूसरी जलाकर ) मैं तो ( फिर बुझ जाती है, अतः तीसरी जलाकर ) मैं तो दीनानाथ को अपना मत बता रहा हूँ, तुमसे वाद-विवाद नहीं कर रहा हूँ। तुम कहो और दीनानाथ सुने तो अपना मत बता दूँ, नहीं तो भाई चुप हुआ जाता हूँ।

शक्तिपाल—अच्छा-अच्छा कहो।

दीनानाथ—जो कुछ तुम कहोगे, मैं सहर्ष सुनूँगा।

श्रीनिवास—क्या कह रहा था ? अच्छा, सारांश यह है कि मैं भी देश की सेवा करना चाहता हूँ, पर, भाई, मेरा सेवा का पथ धन कमा-कमाकर अच्छे और श्रेष्ठ कार्यों में लगाने के लिए देना है।

शक्तिपाल—जब तक सोशलिज़्म क़ायम नहीं हो जाता, तब तक यह भी एक बहुत बड़ी ख़िदमत है।

श्रीनिवास—सोशलिज़्म का राज्य हो ही नहीं सकता।

शक्तिपाल—यह तो........

श्रीनिवास—फिर वाद-विवाद आरंभ होगा, अच्छा जाने दो।

थोड़े में मेरा अभिप्राय तो यह है कि अपना पेट भरो, अपने कुटुंब का पालन करो, जो थोड़ा-बहुत समय और धन बचे उससे जितनी दूसरों की भलाई हो सके उतनी कर दो, मेरे मत में तो यही सबसे अच्छा सिद्धांत है। 'आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्' यह हमारे पुराने शास्त्रकारों का भी कथन है।

[ कुछ समय तक कोई कुछ नहीं बोलता। ]

श्रीनिवास—( दीनानाथ से ) फिर क्या निर्णय किया ? लिखी जाय एप्लीकेशन प्रोफ़ेसरी के लिए ? कठिनता तो यह है कि शक्तिपाल स्वप्न देखते हैं और तुम स्वप्न देखकर उन्हीं के अनुसार चलते भी हो। शक्तिपाल सबकी आय बराबर चाहते हैं, पर जब तक वह बराबर नहीं हो जाती, अपनी नहीं छोड़ते।

शक्तिपाल—बेशक, ( सिगरेट जलाते हुए ) क्योंकि वह तो महज़ बेवकूफ़ी होगी; छोड़ भी दी तो जिसे नहीं मिलनी चाहिए, उसे शायद मिल जाय।

श्रीनिवास—फिर शक्तिपाल के कार्यक्रम में भी उनके स्वप्न के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता। अभी एल्-एल्० बी० पास किया है, अब बैरिस्टरी के लिए विलायत जा रहे हैं, वहाँ से लौटकर प्रैक्टिस करेंगे, फिर कदाचित् अपने सिद्धांतों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए कौंसिल में भी चले जायँ।

शक्तिपाल—ज़रूर जाऊँगा। १६२३ के मिडिल में लौट आऊँगा और १६२३ के इलेक्शन में ही खड़ा होऊँगा। इतना ही क्यों,

मिनिस्टर होने की भी कोशिश करूँगा, क्योंकि बिना सियासी इख़्तियारात के हो ही क्या सकता है ?

श्रीनिवास—ठीक, और, दीनानाथ, तुम और तुम्हारा कुटुंब दोनों तुम्हारे स्वप्नों के कारण भूखों मर रहे हैं, और मरेंगे ।

[ दीनानाथ चुप रहता है । ]

श्रीनिवास—फिर कुछ कहो भी ?

दीनानाथ—मैं तुम दोनों का अनुगृहीत हूँ, पर, भाई, मैं अपने ही टूटे-फूटे सेवा-पथ पर चलूँगा ।

[ परदा गिरता है । ]

---

## दूसरा दृश्य

**स्थान**—श्रीनिवास के मकान का दालान

**समय**—तीसरा पहर

[ दालान के पीछे दीवाल है । दोनों ओर दो खंभे हैं । कोई दरवाजा या खिड़की नहीं है । सरला और कमला का प्रवेश । दोनों की अवस्था लगभग २३ वर्ष की है । सरला साँवले रंग की पर साधारणतया सुन्दर स्त्री है । कमला गौरवर्ण की रूपवती रमणी है । सरला बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण धारण किये हुए है । कमला के वस्त्र सफेद खादी के हैं, हाथों में काँच की एक-एक चूड़ी के अतिरिक्त शरीर पर और कोई आभूषण नहीं है । ]

कमला—चार वर्ष बीत गये, सरला, इसी प्रकार कष्ट पाते हुए लगभग चार वर्ष बीत गये। जब बी० ए० पास हुए, तब विवाह हुआ था। आशा थी एम्० ए० पास होने पश्चात् या तो प्रोफ़ेसर हो जायँगे या एल्-एल्० बी० पास कर वकील। हम लोग भी बगीचे और नौकरों से घिरे-घिराये बँगले में रहेंगे। पढ़े हुए सभ्य मनुष्यों के समान हम लोगों की भी वेश-भूषा और खाना-पीना होगा। मोटर में वायु-सेवन होगा और व्यायाम के लिए टेनिस। जब बच्चे होंगे; तब उन्हें आया खिलायेंगी और छोटी-छोटी गाड़ियों में घुमाने ले जायँगी। पाहुनों की आवभगत होगी और मित्रों को प्रीतिभोज दिये जायँगे। पर भाग्य में तो और ही कुछ बदा था। एम्० ए० पास हुए भी तो दो वर्ष होते हैं, पहले तो जेल चले गये और जेल से लौटे भी इतना समय बीत गया, पर अभी भी उन्हें कुटुंबियों के कष्टों की चिंता नहीं।

सरला—तुम समझती हो, बहन, जो मनुष्य अन्य दीन-दुखियों की इतनी सेवा करता है, उसे अपने कुटुंबियों की चिंता नहीं है?

कमला—थोड़ी भी नहीं, उनका तो महात्मा गांधी से भी आगे बढ़कर यह सिद्धांत है न, कि जब यह देश निर्धन है, यहाँ के अधिकांश जनों को पेटभर भोजन नहीं मिलता, वस्त्र नहीं मिलते, रहने को झोपड़े नहीं हैं, तब यहाँ के मुट्ठीभर लोगों को दिन में चार बार उत्तमोत्तम भोजन करने, बहुमूल्य वस्त्र पहनने, ऊँचे-ऊँचे महलों एवं बँगलों में रहने, मोटरों में घूमने और नाना प्रकार के विलासों को भोगने का कोई अधिकार नहीं है।

सरला—पर, कमला, मैंने सुना है, उन्हें अपने लेखों, पुस्तकों आदि से आय तो यथेष्ट हो जाती है; उनके लेख इत्यादि तो इसी देश के नहीं, पर विदेशों के पत्रों तक में छपते हैं।

कमला—बहुत अधिक तो नहीं होती, क्योंकि गाँव-गाँव घूमते रहने के कारण उन्हें लिखने का समय ही बहुत कम मिलता है। फिर जितनी आय होती है वह भी पूरी वे अपने तथा अपने कुटुंब के ऊपर कहाँ व्यय करते हैं ?

सरला—अच्छा !

कमला—कहते हैं, निर्धनों की रहन-सहन में जितना व्यय होता है, उससे अधिक खर्च करने का हमें क्या अधिकार है ? नितांत आवश्यक व्यय के पश्चात् जो कुछ उन्हें अपनी आय में से बचता है, वह भी आपहिज़ों के भोजन, दरिद्र रोगियों की ओषधि और निर्धन विद्यार्थियों की सहायता आदि में जाता है।

सरला—जब स्वयं की आय का यह लेखा है, तब जो धन लोग उन्हें दान में देते हैं, उसकी तो एक कौड़ी भी निज के खर्च में क्यों जाती होगी ?

कमला—राम का नाम लो, सरला, जब कोई भी उन्हें दान देता है, उसी समय वे पूछ लेते हैं कि यह द्रव्य किस कार्य में व्यय किया जाय, और दाता जिस कार्य में कहते हैं, उसमें तत्काल लगा दिया जाता है।

सरला—तो, कमला, तुम्हारा मत है कि तुम लोग बड़े दुखी हो और जो महलों और बँगलों में रहकर मोटरों पर वायुसेवन करते

एवं अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनते और उत्तमोत्तम भोजन करते हैं, वे बड़े सुखी हैं ?

कमला—इस संसार में इससे अधिक सुख और क्या हो सकता है ? हाँ, मुँह से परोपकार चिल्लाते रहना बुरा नहीं है।

सरला—फिर, वहन, मुझे क्यों क्लेश है ? मैं तो आज उस गृह की स्वामिनी हूँ, जो इस देश के बड़े-से-बड़े श्रीमान् गृहों में से एक है।

कमला—इसका कारण दूसरा है, सरला ! क्षमा करना, यदि श्रीनिवासजी सच्चरित्र होते तो तुम से अधिक सुख और किसे हो सकता था ?

सरला—मुझे संदेह है कि फिर भी मुझे इस धनवान जीवन में सुख होता या नहीं। फिर कमला, ऐश्वर्य के साथ सच्चरित्रता बहुत कम देखने में आती है । उनके इतने श्रीमान मित्र हैं, पर सब वैसे के वैसे।

कमला—शिक्षितों में यह बात नहीं होती।

सरला—क्यों ? वे भी तो बी० ए० पास हैं और उनके अनेक दुश्चरित्र श्रीमान् मित्र भी शिक्षित हैं।

कमला—मेरा अभिप्राय उन शिक्षितों से है, जो मध्यम श्रेणी के कहे जाते हैं।

सरला—उनमें प्रायः दूसरा दोष आ जाता है, वह है अधिकार-प्राप्ति का प्रयत्न। शक्तिपालजी इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। विलायत से बैरिस्टर होकर और विवाह करके लौटे देर नहीं हुई कि कौंसिल

में जाने की सोची। उनके सौभाग्य से चुनाव भी इसी समय आ गया। फिर अकेले खड़े हुए हों, यह भी नहीं, पूरा दल बनाकर खड़े हुए। सफलता उन्हें अवश्य मिल गई और वे मिनिस्टर भी हो गये, पर चुनाव में जो पर्चेबाज़ी हुई, झूठ बोला गया, और लांच में रुपया बहा, उससे तुम समझती हो किसी की आत्मा को कभी सुख हो सकता है ? फिर यह सब हुआ उस दल के लिए जो अपने को साम्यवादी कहता है। बहन, तुम्हें इस चुनाव का पूरा वृत्तांत ज्ञात नहीं, पर मैं जानती हूँ, क्योंकि सारा चुनाव मेरे घर के रुपयों से ही लड़ा गया है।

कमला—ऐसे मध्यम श्रेणी के व्यक्तियों के संबंध में भी मेरा कहना नहीं है।

सरला—तब किसके संबंध में कहना है ?

कमला—वकील, बैरिस्टर, डाक्टर, अध्यापक, सरकारी कर्मचारी इत्यादि; जिनकी दृष्टि अधिकार-प्राप्ति की ओर भी नहीं रहती।

सरला—उनमें से भी मैं बहुतों का वृत्तांत जानती हूँ, कमला ! क्योंकि यहाँ तो सभी का जमघट रहता है। प्रतिद्वंद्विता, जो स्वार्थ की पत्नी, और दुःख, जो इन दोनों का पुत्र है, उसका इन पर भी पूर्ण राज्य है। आपसी प्रतिद्वंद्विता के कारण सुख इनसे भी कोसों दूर भागते हैं। मैं तो समझती हूँ, बहन, कि ईश्वर ने जैसा पति तुम्हें दिया है, और उसके साथ जिस प्रकार तुम्हारा जीवन बीत रहा है, उससे तुम्हें सच्चा सुख मिलना चाहिए।

कमला—ठीक है, बहन, जीभ हिलाने में क्या लगता है ? तुम यदि मेरे स्थान पर होतीं, इसी प्रकार का जीवन व्यतीत करना पड़ता, तो तुम्हें ज्ञात होता। फिर जब तक बच्चे नहीं हुए थे, तब तक तो कष्ट मुझ ही तक था। जब मैं किसी वकील, डाक्टर, प्रोफ़ेसर या सरकारी कर्मचारी की स्त्री को अच्छे-अच्छे वस्त्र पहने देखती, जब उनके यहाँ के किसी प्रीतिभोज आदि का वृत्तांत सुनती, तब मैं ही अपना हृदय मसोसकर रह जाती थी। किसी विवाह आदि व्यावहारिक कार्य में भी मैंने जाना छोड़ दिया था, क्योंकि एक तो दूसरे सवारियों पर बैठकर आते और मुझे पैदल जाना पड़ता, और जब सबके बीच में बैठती, तब अपनी वेशभूषा देखकर मुझे ही लज्जा आती थी; फिर भी उस समय इतना क्लेश नहीं था, जितना बच्चे होने के पश्चात् हो गया है। अब जब कभी वह तीन वर्ष का बच्चा और डेढ़ वर्ष की बच्ची दूसरे बच्चों की मिठाई देखकर रोते हैं, मोटर का बिगुल सुनकर 'मोटर-मोटर' चिल्लाते हैं, तब मुझे जो कष्ट होता है, वह मैं ही जानती हूँ। सरला, तुम्हारे यदि बच्चे होते, और तुम्हें भी उन्हें लेकर मेरी उस सेवाकुटी के समान टूटी झोपड़ी में रहना पड़ता और वे बच्चे भी मेरे बच्चों के समान चिल्लाते तो तुम्हें ज्ञात होता कि माता का हृदय बच्चों के कष्टों से किस प्रकार व्यथित होता है। फिर जिसे ये सुख प्राप्त होना संभव नहीं है, उनकी दूसरी बात है, उन्हें उस स्थिति में भी संतोष हो जाता है, पर जब मैं यह सोचती हूँ कि मेरे बच्चों को ये सब सुख उनके पिता के कारण ही प्राप्त नहीं हो रहे हैं, तब मेरे हृदय पर जैसा साँप

लोटता है, उसे तुम कैसे अनुभव कर सकती हो, बहन । ( आँसू टपकते हैं )

सरला—( जल्दी से ) मैंने भूल, भारी भूल की, कमला ! मैं देखती हूँ, मैंने तुमको दुःख पहुँचाया है। ( हाथ जोड़ती हुई ) क्षमा करो, बहन, सच है, मैं तुम्हारे कष्टों का अनुभव नहीं कर सकती ।

कमला—( आँसू पोंछते हुए लंबी साँस लेकर ) नहीं बहन, तुम मुझे क्या दुःख पहुँचाओगी । मेरा भाग्य ही ऐसा है। ( कुछ ठहर कर ) अच्छा, सरला, अब भोजन बनाने का समय हुआ, चलती हूँ ।

सरला—फिर कब आओगी ?

कमला—( जाते हुए ) कभी भी आ जाऊँगी ।

[ एक ओर कमला का और दूसरी ओर सरला का प्रस्थान ]

[ परदा उठता है ]

## तीसरा दृश्य

**स्थान**—शक्तिपाल वर्मा के बँगले का एक कमरा ।

**समय**—रात्रि ।

[ कमरा अँगरेजी ढंग से सजा है । तीन ओर दीवालें हैं । दीवालों पर रंगीन फूलदार काग़ज चिपका हुआ है । छत ( सीलिंग ) उसी प्रकार के रंग से रँगी है। पीछे और दोनों ओर की दीवालों में कई दरवाजे और खिड़कियाँ हैं; जिनके किवाड़ों में काँच लगे हैं । अनेक

दरवाजे और खिड़कियाँ खुली हुई हैं जिनसे बाहर के उद्यान का कुछ भाग दिखाई देता है, जिसे चाँदनी का प्रकाश आलोकित किये है। कमरे के फ़र्श पर विलायती ग़लीचा है। दीवालों पर इँगलैंड के दृश्यों के तैलचित्र ( ऑयल पेंटिंग ) लगे हैं। छत से चारों कोनों में चार बिजली की बत्तियाँ झूल रही हैं, जो रेशमी कपड़े के शेड से ढकी हुई हैं। बीच में सफेद रंग का बिजली का पंखा है। गद्दीदार सोफ़ा, आरामकुरसी और कुरसियाँ तथा टेबलें सजी हुई हैं। टेबलों पर फूलों और पत्तियों से भरे हुए फूलदान, हाथीदाँत, लकड़ी एवं पीतल के खिलौने, सीप तथा सफेद और काले पत्थर के छोटे-छोटे बक्स आदि ( क्यूरिओ ) और चाँदी के फ्रेमों में जड़ी हुई कई मेमों और बच्चों की तसवीरें सजाई गई हैं। एक ओर लिखने की ( राइटिंग ) टेबल है, जिस पर लिखने का सामान और बिजली का टेबल लैंप रक्खा है। इस टेबल के सामने दफ़्तर की कुरसी ( आफ़िस चेयर ) है। दूसरी तरफ पियानो है और पियानो के सामने मूढ़ा ( पियानो स्टूल )। दीवाल के बीचोंबीच घड़ी लगी हुई है, जिसमें सात बजकर पैंतीस मिनिट हुए हैं। सोफ़ा पर मिसेज़ मार्गरेट वर्मा बैठी है। मार्गरेट की अवस्था लगभग २२ वर्ष की है। वह अत्यंत सुंदर अँगरेज-महिला है। चाक-लेट रंग का रेशमी छोटा-सा लहँगा ( स्कर्ट ) और नीले रंग का शलूका ( ब्लाउज़ ) पहने है। पैरों में जाँघों तक शरीर के रंग से मिलते हुए रेशमी मोजे ( स्टाकिंग्स ) हैं और पैरों में ऊँची एड़ी के शरबती रंग के जूते। सिर खुला है। बाल सुनहरे हैं, जो कटे हुए ( बाब्ड ) हैं। ]

मार्गरेट—(बाईं कलाई की घड़ी पर दृष्टि रक्खे उसी हाथ से दाहिने हाथ की नब्ज़ देखते हुए ) **सैवंटी सिक्स**। ( खड़े होकर फिर उसी प्रकार घड़ी और नब्ज़ को देख कर ) **एट्टी एट**। ( सोफा पर लेट उसी प्रकार घड़ी और नब्ज़ देखकर ) **सैवंटी टू**। लिखने की टेबल पर जा नोटबुक में कुछ लिखती है, फिर टेबल की दराज़ खोल उसमें से दो थरमामीटर ( बुख़ार नापने का यंत्र ) निकालकर सोफ़ा पर आ थरमामीटर घरों ( केस ) में से निकाल एक मुँह में और दूसरा कपड़ों के नीचे बग़ल में लगाती है। कुछ देर घड़ी देखने के पश्चात् मुँह का थरमामीटर निकाल और देखकर ) **नाइंटीएट पाइंट टू**। ( उस थरमामीटर को घर में रख बग़ल के थरमामीटर को निकाल और देखकर ) **नाइंटीसेवन पाइंट एट**।

[ अँगरेजी कपड़ों में शक्तिपाल का प्रवेश ]

शक्तिपाल—**हलो, डार्लिंग, फिर थरमामीटर! दिन भर तुम थरमामीटर लगाती और पल्स देखती हो!**

मार्गरेट—**इस कंट्री का क्लाइमेट इटना हाट कि हमेशा फ़ीवर का डाउट रेटा, डियर। हर थर्ड आवर पर हमको टेंप्रेचर लेनाई परटा और पल्स भी काउंट करनाई परटा। जब कबी टेंप्रेचर नाइंटीएट पाइंट फोर के ऊपर या पल्स एट्टी के ऊपर जाटा टबी सब काम बंड कर बेड में कनफ़ाईन होनाई परटा।** ( थरमामीटर केस में रखती है। )

शक्तिपाल—( उसी सोफ़े पर बैठते हुए ) **पर, माइ डियर, इस तरह के शक-ही-शक में तुम बीमार हो जाओगी।**

मार्गरेट—नेई नेई, कोई डुनिया में इस टरा बीमार नेई हो सकटा। ये तो हेल्थ का हिफाजट रखने का क्वेश्चन। आच्चा, डियर, अब हम हिंडोस्टानी बोल लेटा, कि नेई ?

शक्तिपाल—हाँ, हाँ तुम इतनी हिंदुस्तानी बोलने और समझने लगीं कि काम चल जाता है।

मार्गरेट—पर अबी टुम जिटना इँगलिश बोल सकटा और समज सकटा उटना हम हिंडोस्टानी नेई।

शक्तिपाल—मुझे इँगलिश सीखते आज फ़िफ्टीन इयर्स के क़रीब हो गये, डार्लिंग। ( जेब में से सिगरेटकेस निकाल मार्गरेट की ओर करता है। मार्गरेट एक उठा लेती है। ) उतनी हिंदुस्तानी तुम एक साल में क्योंकर सीख सकती हो ? यह तो हिंदुस्तानी पढ़ने के साथ ही तुमने मेरे साथ भी हिंदुस्तानी में ही बोलने का डिसीशन किया है, नहीं तो इतनी जल्दी इतनी भी नहीं आती।

मार्गरेट—नेई डियर, इसका एक रीजन और हो सकटा। इस कंट्री में आके हमको ये भी मालूम हुआ कि हिंडोस्टानी लोग अँगरेज़ों का जिटना नकल कर सकटा, उटना हम लोग नेई कर सकटा। ( शक्तिपाल माचिस से उसका सिगरेट जलाता है। कुछ ठहर कर ) आच्चा, टुमारा पालिटिक्स टो अब खटम हो गिया, इलेक्शन भी हो गिया, टुम मिनिस्टर भी हो गिया, अब इस कंट्री का सैर कराने हमको कब ले चलटा ? इंडिया सनशाइन और स्पोर्ट्‌स का लैंड कहा जाटा, यहाँ का हिस्टारिकल प्लेसेज़ और हिल स्टेशनस भी बोट मशहूर।

शक्तिपाल—ग्रे जुअली सब जगह चलेंगे डियर, ज़रा मेरे पोर्टफोलिओ के जितने डिपार्टमेंट हैं, उनको अच्छी तरह से समझ लूँ, ( अपना सिगरेट जलाते हुए ) थोड़ा...( माचिस बुझ जाती है अतः दूसरी जलाकर ) थोड़ा ठीक भी कर दूँ, जिन्हें ओवर हाल करने की ज़रूरत है, इन्हें ओवर हाल कर लूँ।

मार्गरेट—( अधीर होकर ) ये टो बोट काम हो गिया। मालूम होटा टुमको पालिटिक्स से कबी टाइम नेई मिलेगा।

शक्तिपाल—नहीं, नहीं, टाइम क्यों नहीं मिलेगा। पर जो रेस्पांसिबिलिटी ली है, उसे सोशलिज़्म......

[ लाल वर्दी पहने हुए चपरासी का प्रवेश। चपरासी के हाथ में चाँदी की रकाबी में एक कार्ड है। वह सलाम कर रकाबी आगे करता है, शक्तिपाल कार्ड उठा, चश्मा उतार कार्ड पढ़ता है। फिर चश्मा लगा लेता है। ]

शक्तिपाल—मिस्टर श्रीनिवास; अच्छा सलाम दो।

[ चपरासी का सलाम कर प्रस्थान ]

शक्तिपाल—( ज़ोर से ) देखो, चपरासी! चपरासी!

मार्गरेट—( जल्दी से शक्तिपाल के मुँह पर हाथ लगाते हुए ) ओ! डोंट मेक नायज़ लाइक दिस, माइ डियर! इट ऐक्ट्स ऑन माई नर्व्ज़! बेल क्यों नेई ठोका?

[ चपरासी का प्रवेश। वह सलाम करता है। ]

शक्तिपाल—हाँ, हाँ, अच्छा, बहुत ख़ातिर से उन्हें भेजना।

चपरासी—बहुत ख़ूब सरकार! ( सलाम करके जाता है )

मार्गरेट—यू मस्ट लर्न मैनर्स ऐंड एटिकेट, डियर! हमटो हिन्डोस्टानी सीख गिया, पर इटना कोशिश करने पर बी टुमने अब टक मैनर्स और एटिकेट नेई सीखा। नोकर को कबी मट पुकारो, बेल ठोको। खाने का टाइम पर छुरी-काँटा इस टरा यूज़ करो कि बर्टन में उससे शोर नेई हो; खाने में मुँह से (चप-चप करते हुए) इस टरा गुलगपाड़ा मट करो। वाइफ़ के रूम में भी बग़ैर इटला मट जाओ। इडर-उडर.........

[ श्रीनिवास का अँगरेज़ी कपड़ों में प्रवेश ]

श्रीनिवास—( टोप उतारते हुए ) गुड इवनिंग मिसेज़ वर्मा, गुड इवनिंग मिस्टर वर्मा।

मार्गरेट—( उठते हुए ) गुड ईवनिंग, गुड ईवनिंग मिस्टर शीनिवैश!

शक्तिपाल—( उठते हुए ) गुड इवनिंग, गुड इवनिंग।

श्रीनिवास—( निकट पहुँच मार्गरेट से हाथ मिलाते हुए ) हाउ डू यू डू ?

मार्गरेट—हाउ डू यू डू ?

शक्तिपाल—( श्रीनिवास से हाथ मिलाते हुए ) हाउ डू यू डू ?

श्रीनिवास—हाउ डू यू डू ?

मार्गरेट—टेक योर सीट मिस्टर शीनवैश।

श्रीनिवासी—थैंक्यू, थैंक्यू।

[ सब लोग बैठते हैं ]

मार्गरेट—( फिर उठते हुए ) एस्क्यूज़ मी, हम अबी ज़रा डाइनिंगरूम डेखकर आटा।

श्रीनिवास—अब तो आप अच्छी हिंदुस्तानी बोलने लगीं।

मार्गरेट—( मुसकराकर ) कोशिश करटा।

[ श्रीनिवास खड़ा हो जाता है। मार्गरेट जाती है। वह बैठ जाता है। ]

श्रीनिवास—( जेब से एक अखबार का अंक निकाल शक्तिपाल को देते हुए ) रेड पेंसिल से मार्क्ड पोर्शन देखो, शक्तिपाल, इस लेख में वोटरों को धमकियाँ और लांच देने का मुझ पर आक्षेप कर कैसी गालियाँ दी गई हैं।

[ शक्तिपाल अखबार ले चश्मा उतारकर पढ़ता है ]

शक्तिपाल—( पढ़ने के पश्चात् फिर चश्मा लगाते हुए ) हाँ, गालियाँ तो ज़रूर दी गई हैं, पर, भाई आर्टिकल बड़ी अच्छी तरह लिखा गया है। कितनी सचाई टपकती है ? क्या सचमुच इलेक्शन में यह सब कुछ हुआ है ? ( सिगरेटकेस निकाल आगे करता है। )

श्रीनिवास—( सिगरेट उठाते हुए ) किस चुनाव में यह सब नहीं होता ?

शक्तिपाल—पर तुमने मुझसे तो कभी इसकी बाबत बातचीत नहीं की; इलेक्शन के वक्त तक नहीं कहा।

श्रीनिवास—आवश्यकता ही नहीं पड़ी, क्योंकि मैं समझता था

कि तुमको यह सब ज्ञात है, और फिर चुनाव का सारा कार्य तुमने मुझ पर छोड़ दिया था।

शक्तिपाल—पर, भाई, यह सब तो सोशलिज़्म के प्रिंसिपल्स के ख़िलाफ़........

श्रीनिवास—सोशलिज़्म का स्वप्न देखते-देखते अब क्या तुम भी उसके अनुसार चलना चाहते हो ? ( घृणा से हँस कर ) अजी साहब, यह सब न किया जाता तो आप तथा आपका सारा साम्य-वादी दल हार जाता और आप मिनिस्टर भी न हो पाते।

शक्तिपाल—( लंबी साँस लेकर ) इससे तो हार ज़्यादा अच्छी थी।

श्रीनिवास—लीजिए अब तो आपस में ही जूती चलने लगी। भाई, मेरा तो चुनाव में केवल कौंसिल में जाने का स्वार्थ था ( सिग-रेट जलाते हुए )। वह मैं ज़मींदारों की ओर से किसी प्रकार भी चला जाता। मैंने तो इतना परिश्रम और व्यय केवल तुम्हारे और तुम्हारे दल के लिए किया। अब ऊपर से तुम्हीं.........

शक्तिपाल—खैर जाने दो, हुआ सो हुआ, अब यह कहो कि यह आर्टिकल किसका लिखा हो सकता है ?

श्रीनिवास—यह कहना यद्यपि कठिन था, पर जिस एक बात के आज कई दिन, वरन् महीनों से समाचार मिल रहे हैं, उससे लेखक का नाम अनुमान क्या, निश्चय किया जा सकता है।

शक्तिपाल—कैसे ?

श्रीनिवास—यह तो तुम जानते ही हो कि दीनानाथ यहाँ का

महात्मा गाँधी हो गया है। उसकी झोपड़ी सेवाकुटी में ज़मींदार, सेठ-साहूकार, किसान-मज़दूर, औरतें-बच्चे हर प्रकार के जीव पहुँचते हैं, क्योंकि इस मनुष्य-समाज को तो कोई नई वस्तु चाहिए। जहाँ देखा कि एक एम्० ए० पास आदमी झोपड़ी में साधुओं के सदृश रहता है कि लट्टू हो गये।

शक्तिपाल—हाँ, हाँ, विलायत से लौटने पर तुमने दीनानाथ का सब हाल बताया था और उसकी बहुत तारीफ़ भी की थी; मैं भी उससे मिला था।

श्रीनिवास—उस प्रशंसा की बात तो पीछे बताऊँगा, अभी इस लेख से संबंध रखने वाली बातें सुनो।

शक्तिपाल—अच्छा, अच्छा।

श्रीनिवास—उसके पास जाने वालों में वह शिवदत्त ज़मींदार भी है, जो मेरे विरुद्ध कौंसिल के लिए खड़ा हुआ था। इतना ही नहीं, वह उसके बड़े भारी भक्तों में से एक है।

शक्तिपाल—अच्छा।

श्रीनिवास—शिवदत्त को इस हार से बड़ी चोट पहुँची है; अतः मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि यह लेख शिवदत्त ने दीनानाथ से लिखाया है।

शक्तिपाल—यह तुम कैसे कह सकते हो ?

श्रीनिवास—दीनानाथ के अतिरिक्त और कोई यहाँ ऐसा अच्छा लिख नहीं सकता।

शक्तिपाल—हो सकता है, पर तुम समझते हो वह ऐसे झगड़ों में पड़ेगा ?

श्रीनिवास—अरे जाने दो इसे। मैंने जब तुम्हारे सामने उसकी प्रशंसा की थी, उस समय उसके चरित्र का दूसरा पहलू मुझे मालूम नहीं था। ऊपर से बड़ा सीधा दीखता है, बड़ी सादी रहन-सहन है, बड़ा धर्मात्मा और सिद्धांतवादी बनता है, पर भीतर उसके विष भरा है, विष ! उस सेवाकुटी में जो-जो कर्म होते हैं, वे भी अब मैंने सुन लिये हैं।

शक्तिपाल—( आश्चर्य से ) कैसे श्रीनिवास ?

श्रीनिवास—ऐसा कौन-सा दुष्कर्म है जो वहाँ न होता हो। व्यभिचार की वह भूमि है तथा जुए और मदिरा की वेदी।

शक्तिपाल—( और भी आश्चर्य से ) अच्छा ! यह सब तुम्हारा शक ही है या इन बातों के सबूत भी हैं ?

श्रीनिवास—एक नहीं, बीस प्रमाण है। और वे सब चुनाव में मिले। तुम स्वयं जानते हो और जैसा तुमने अभी कहा भी, कि पहले मैंने तुमसे उसकी कितनी प्रशंसा की थी।

शक्तिपाल—ज़रूर।

श्रीनिवास—पर इस चुनाव में हर प्रकार के लोगों से मिलने का काम पड़ने के कारण महात्माजी की क़लई खुल गई।

शक्तिपाल—कैसे ?

श्रीनिवास—उसका प्रभाव बहुत लोगों पर होने के कारण मैंने उससे अपने दल को चुनाव में सहायता करने को कहा। मुझसे तो

उसने कहा कि मैं इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहता, पर पीछे से मालूम हुआ कि उसने छिपे-छिपे शिवदत्त की सहायता की थी और इसके लिए वोटरों को उसकी कुटी में मदिरा पिलाई गई थी तथा लांच बाँटी गई थी।

शक्तिपाल—(आश्चर्य से) ताज्जुब की बात है।

श्रीनिवास—अब जब शिवदत्त चुनाव में हार गया तो मेरे विरुद्ध यह लेख निकाला। हम लोगों का यह मित्र था; विश्वासघाती कहीं का। देखो, शक्तिपाल, अब इस महात्माइज़्म का जब तक यहाँ से अंत नहीं किया जायगा, तब तक नित्य-प्रति इसी प्रकार के झगड़े होंगे। दीनानाथ की सारी धूर्तता को समाज के सम्मुख प्रकट करना पड़ेगा। तभी वह यहाँ से निकलेगा।

शक्तिपाल—पर उसके ख़िलाफ़ अगर कुछ कहा जायगा तो लोग उस पर यक़ीन करेंगे?

श्रीनिवास—तुम कहाँ की बातें करते हो? यदि किसी की झूठी निंदा भी फैला दी जाय तो लोग मान जाते हैं।

शक्तिपाल—आख़िर तुम कैसे फैलाओगे?

श्रीनिवास—मैंने उसे निर्धनों को भोजन और औषधि बाँटने के लिए कभी-कभी कुछ रुपया दिया है। उसने मुझे कभी ख़र्च का लेखा नहीं दिया; 'रेंडीशन आफ़ अकाउंट' लेखा न समझाने का उस पर मैं मुक़दमा चलाता हूँ। यदि मुक़दमे में हार भी गया तो दीनानाथ की तो अकीर्ति हो जायगी, क्योंकि वह निर्धन है और सभी मान लेंगे कि धन की आवश्यकता होने के कारण उसने अवश्य

रुपया खाया होगा। (जोर से धुआँ खींचकर छोड़ते हुए) जहाँ इसके लिए उसकी अकीर्ति हुई, वहाँ वह रुपया बुरे मार्गों में खर्च हुआ है, यह तो केवल एक मनुष्य के दूसरे मनुष्य से कह देने भर की बात है। घर-घर बात फैल जायगी और इसे प्रमाणित किये बिना ही लोग इसे मान लेंगे।

शक्तिपाल—पर, भाई, यह सब मुनासिब नहीं मालूम होता। सोशलिज़्म के प्रिंसिपल्स........

श्रीनिवास—अरे! हटाओ तुम्हारे सोशलिज़्म के प्रिंसिपल्स। तुम्हारे कारण गालियाँ खाऊँ मैं और तुम साम्यवाद के सिद्धांतों की बातें करो। ठीक भी तो है गालियाँ तुम्हें थोड़े ही दी गई हैं; वे तो मुझे......

[ मार्गरेट का प्रवेश ]

मार्गरेट—वेल माइ डियर, हमको याड आ गिया। आज हमारा शाडी का फ़र्स्ट एनिवरसरी। फ़ारमल इनविटेशन टो हमने नेई भेजा, मगर मिस्टर शीनिवैश का साट टो हमारा बड़ा इनफ़ारमल रिलेशंस। मिस्टर शीनिवैश को टो आज यईं डिनर लेना होगा।

[ बैठ जाती है ]

शक्तिपाल—कहो, श्रीनिवास, कोई उज्र तो नहीं है ?

श्रीनिवास—मुझे क्या आपत्ति हो सकती है।

शक्तिपाल—बाई दि वे, इस शादी के पहले का भी एक इंटरेस्टिंग इंसीडेंट सुन लो। ( मार्गरेट से ) डारलिंग, फ़ादर का वह ख़त, जो

उन्होंने हम लोगों की कोर्टशिप का हाल सुनकर हिंदुस्तान से मुझे भेजा था, आज लाकर श्रीनिवास को भी दिखाता हूँ।

मार्गरेट—हाँ हाँ, ज़रूर डिखलाओ, ज़रूर डिखलाओ; वो तो डिखलाने का लायक़ है।

[ शक्तिपाल का प्रस्थान ]

मार्गरेट—वेल मिस्टर शीनिवैश, हमने सुना आपका टो बोट बड़ा विज़नेस। बांबे, एमडाबैड, कैलकटा, मैंडरैस, डेल्ही, लैहोर, कैरैंची, कैनपोर, लैकनौ, ऐलेबैड, बैनरस, सबी बड़ा-बड़ा सिटीज़ में आपका फ़र्म का ब्रेंचैज़।

श्रीनिवास—हाँ मिसेज़ वर्मा, थोड़ा-बहुत विज़नेस तो होता ही है, पर इँगलैंड की बड़ी-बड़ी कनसंर्स के सामने तो मेरा बिज़नेस क्या है?

मार्गरेट—और आप अपना विजनेस डेखने को टूरिंग बी बोट करटा होगा?

श्रीनिवास—करना ही पड़ता है, मिसेज़ वर्मा।

मार्गरेट—हमको ये कंट्री डेखने का बोट शोक़, मिस्टर शीनि-वैश। आपका टूर में बड़ा-बड़ा जगा डेखने को कबी-कबी हम बी आपका साट जावे टो आपको कोई ट्रबल टो नेई होगा, क्योंकि मिस्टर वर्मा को टो कौंसिल का काम से बोट कम फुरसट मिलेगा?

श्रीनिवास—( हर्ष से ) ट्रबल! ओह! ओह! ज़रा भी नहीं!

मुझे तो आपके साथ चलने से बहुत ख़ुशी होगी । अभी मैं जल्दी ही कलकत्ता जाने वाला हूँ, आप ख़ुशी से मेरे साथ चलें ।

[ शक्तिपाल का एक लिफ़ाफ़ा हाथ में लिये हुए प्रवेश ।)

शक्तिपाल—( लिफ़ाफ़ा श्रीनिवास को देते हुए ) यह ख़त है, पढ़ो, श्रीनिवास ! ( बैठ जाता है ।)

श्रीनिवास—( पत्र पढ़कर मुसकराते हुए ) पुराने विचार हैं ।

शक्तिपाल—नहीं नहीं, इसमें ग़ौर की एक बात है, जिस पर तुमने शायद ख़याल नहीं किया ।

श्रीनिवास—क्या ?

शक्तिपाल—उन्होंने लिखा है कि हिंदुस्तान में तेंतीस करोड़ आदमियों में साढ़े सोलह करोड़ औरतें हैं, इसलिए विलायत के बनिस्बत हिंदुस्तान में शादी के लिए चुनाव करने का बहुत ज़्यादा मौक़ा है ।

श्रीनिवास—हाँ, यह तो लिखा है ।

शक्तिपाल—ख़त पाकर इस साढ़े सोलह करोड़ के बड़े भारी फ़िगर पर मैं बहुत देर तक ख़यालातों को दौड़ाता रहा और तुम भी ज़रा ग़ौर करो ।

श्रीनिवास—अच्छा ।

शक्तिपाल—साढ़े सोलह करोड़ में से अगर हम बच्ची, बूढ़ी और जिनकी शादी हो चुकी है, या जो विधवाएँ हैं, उन्हें निकाल दें, तब तो यह फ़िगर छोटा हो ही जाता है ।

श्रीनिवास—अवश्य ।

शक्तिपाल—पर इसे ज़रा दूसरी तरह से देखो। हमारे यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार जात हैं, और एक-एक जात में न-जाने कितनी और हैं, फिर उनमें भी फ़िरके हैं।

श्रीनिवास—यह भी है।

शक्तिपाल—मैं कायस्थ हूँ, पर कायस्थों में भी मैं सब के यहाँ शादी नहीं कर सकता। मेरी शादी मेरे फिरके ही में हो सकती थी।

श्रीनिवास—बराबर।

शक्तिपाल—इस तरह मैंने बहुत देर तक हिसाब-किताब लगाने के बाद देखा तो मालूम हुआ कि अगर मैं हिंदुस्तान में शादी करना चाहूँ, और फ़ादर की मरजी के मुताबिक, तो मुझे साढ़े सोलह करोड़ में से नहीं, पर सिर्फ दो औरतों में से चुनाव करना पड़ेगा।

[ सब हँस पड़ते हैं ]

श्रीनिवास—फिर उन दो का भी ( मार्गरेट की ओर संकेत कर ) इनसे क्या मिलान हो सकता था ? मेरी औरत पढ़ी लिखी है, पर मैं ही जानता हूँ।

शक्तिपाल—अरे इनसे कैंपैरिज़न ! हिंदुस्तान की औरतों में यह ब्यूटी, यह इंटलैक्ट, यह ऐज्यूकेशन, यह एटीकेट, यह रिफ़ाइनमेंट,......

मार्गरेट—( मुसकराते हुए ) ओ ! एस्क्यूज़ मी, माइ डियर, हमारा टो शायड यहाँ बैठना मुश्किल हो जायगा। ( नेपथ्य से घंटी बजती है ) चलो चलो, डिनर का घंटा बजटा।

[ तीनों मुसकराते हुए उठते हैं। परदा गिरता है।]

## चौथा दृश्य

**स्थान**—दीनानाथ की सेवा-कुटी के बाहर का मैदान।

**समय**—तीसरा पहर।

[ दूर पर खपरों से छाई हुई एक छोटी-सी कुटी दिखती है। एक ओर खादी के वस्त्र पहने हुए दो युवकों और दूसरी ओर से एक बच्चे को गोद में लिये तथा दूसरे की उँगली पकड़े कमला का प्रवेश। उसके बच्चे भी खादी के वस्त्र पहने हैं। ]

कमला—( युवकों से ) **मुक़दमे का फ़ैसला हो गया ?**

एक युवक—**फ़ैसला तो अभी नहीं हुआ, माताजी, पर फ़ैसला किस पक्ष में होगा, इसका आभास जान पड़ने लगा है।**

कमला—**किस पक्ष में होगा ?**

वही युवक—**हम लोग ही जीतेंगे।**

दूसरा युवक—**जीत तो हम जायँगे, पर हमारी अकीर्ति बहुत हुई।**

पहला—**इसमें संदेह नहीं।**

दूसरा युवक—**यह जनता बड़ी अद्भुत है। हमारी निर्धनता के कारण हम रुपये खा गये, इस झूठ बात पर विश्वास हो गया; पर हमारी इतनी सेवाओं, इतने त्याग का किसी ने....**

कमला—**कितनी बार कहूँ, अरे, यह सब त्याग और सेवा निरर्थक है। पर अब भी आपके नेता महोदय के नेत्र खुलें, तब है।**

[ नेपथ्य में मोटर का बिगुल बजता है । ]

खड़ा हुआ बच्चा—मोतल, मोतल, मोतल, मोतल ।

एक युवक—( बच्चे को गोद में उठाकर ) चलो, हम तुम्हें मोतल में बैठायेंगे ।

कमला—कहीं वे आ जायँगे तो भुनभुनाने लगेंगे, रहने दो ।

वही युवक—नहीं, माता जी, अभी उनके आने में विलंब है । टैक्सी लॉरी है, निकट ही उसका स्टैंड है । अभी बैठाकर ले आता हूँ । बच्चे का जी बहल जायगा ।

बच्चा—हाँ हाँ, अम्मा, मैं जलूल बैथूँगा । जलूल बैथूँगा ।

कमला—( आँसू भरकर ) बेटा, तुम्हारे बाप चाहें तो किराये की लारी क्या, घर की मोटर हो सकती है, पर तुम्हारे भाग्य में तो......( गला भर आता है । )

[ वह युवक बच्चे को गोद में उठा कर ले जाता है । ]

दूसरा युवक—( जेब से रुमाल निकाल, उसमें बँधा हुआ मिठाई का दोना खोलते हुए ) आ, बच्ची आ, देख कैसे गुलाबजामुन हैं ।

कमला—तुमने नित्य-प्रति बच्चों को मिठाई खिला-खिलाकर आपत्ति कर डाली है । जब इन्हें मिठाई नहीं मिलती, तभी चिल्लाते हैं । वे मुझपर भुनभुनाते हैं, कहते हैं, चोरी से बच्चों को मिठाई खिलाई जाती होगी, नहीं तो बच्चे मिठाई क्या जानें ।

[ वह युवक बच्ची को गोद में ले गुलाबजामुन खिलाता है । दीनानाथ का प्रवेश । युवक मिठाई का दोना छिपाना चाहता है, पर दीनानाथ उसे देख लेता है । ]

दीनानाथ—कमला, मुक़दमे में मैं विजयी हो गया, पर इस जनता का सच्चा स्वरूप मुझे दिख गया।

कमला—मैं तो पहले ही कहती थी।

दीनानाथ—तुम्हारा कहना ही सत्य निकला। मेरी सारी सेवाएँ और त्याग एक ओर, और वह झूठा अपवाद एक ओर; पर अपवाद का ही पलड़ा भारी रहा।

कमला—रहने ही वाला था।

दीनानाथ—मेरी जीत होने पर भी अनेक मनुष्य ऐसा कहते सुने गये कि मुक़दमे में श्रीनिवास हार गया तो क्या हुआ, ऐसी बातों को प्रमाणित करना बड़ा कठिन होता है, पर दीनानाथ ने रुपया अवश्य खाया होगा; और इतना क्या, न-जाने कितना और खाया होगा।

कमला—आप ही देख लीजिए!

दीनानाथ—मैं और सार्वजनिक रुपया खाऊँ! (लंबी साँस लेकर) क्या कहूँ? यदि रुपयों की ही इतनी चाह होती तो सेवा का यह पथ ही क्यों ग्रहण करता?

कमला—यह पथ ही ठीक नहीं है।

दीनानाथ—मानता हूँ। मैं भी पढ़ा-लिखा हूँ, बहुत कुछ कमा सकता था। आज भी थोड़ा-बहुत समय बचाकर जो कमाता हूँ, वह भी पूरा अपने पर, तुम पर या इन बच्चों पर ख़र्च नहीं करता।

कमला—इसी का तो यह फल है।

दीनानाथ—( फिर लंबी साँस लेकर ) कमला, मेरा हृदय टूक-

टूक हो गया है। सचमुच संसार में सत्य का कोई मूल्य नहीं। ( बच्ची को गोद में उठाकर ) बच्ची, गुलाबजामुन खाती थी ? खा बेटी, खा। ( युवक से दोना माँगते हुए ) लाओ, मुझे दो, मैं इसे अपने हाथ से मिठाई खिलाऊँगा, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाऊँगा।

[ बच्चे का दौड़ते हुए प्रवेश। ]

बच्चा—अम्मा, हम थूब मोतल में बैथे, थूब मोतल में बैथे।

दीनानाथ—बेटा, तुम्हें मोटर भी ले दूँगा। लो, तुम भी मिठाई खाओ। ( दोनों बच्चों को मिठाई खिलाते हुए कमला से ) कमला, मैं आज ही प्रोफ़ेसरी के लिए प्रार्थनापत्र भेजता हूँ।

कमला—( गद्‌गद् कंठ से ) धन्य ! धन्य भाग मेरे ! और धन्य इन बच्चों के !

[ यवनिका पतन ]

---

# दूसरा अंक

## पहला दृश्य

**स्थान**—सेवाकुटी के बाहर का मैदान।

**समय**—संध्या।

[ दीनानाथ और कमला खड़े हैं ]

कमला—प्रोफेसरी के लिए स्वयं प्रार्थनापत्र भेजने पर, उसके स्वीकृत हो जाने और प्रोफ़ेसरी मिलने पर भी अब आप प्रोफ़ेसरी न करेंगे। ? युनिवर्सिटीवाले क्या कहेंगे ?

दीनानाथ—मैं उन्हें स्पष्ट लिख दूँगा कि क्षणिक निर्बलता के आवेश में आकर मैंने वह प्रार्थनापत्र भेजा था।

कमला—( आश्चर्य से ) निर्बलता के आवेश में आकर ?

दीनानाथ—अवश्य।

कमला—कैसी निर्बलता ?

दीनानाथ—वही स्वार्थ की।

कमला—आपके स्वार्थ की व्याख्या ही समझना कठिन है।

दीनानाथ—नहीं, कमला, बहुत ही सरल है।

कमला—कैसे ?

दीनानाथ—देखो, स्वार्थ का मूलोच्छेदन केवल विषयभोगों के त्याग से ही नहीं होता।

कमला—तो फिर विषयभोग का त्याग निरर्थक है। आपने व्यर्थ ही इतना कष्ट पाया और पा रहे हैं ?

दीनानाथ—नहीं उनका त्याग तो आवश्यक है। बिना उनके त्याग के तो स्वार्थत्याग के पथ में पैर रखना ही असंभव है। जिस प्रकार लंबी-से-लंबी यात्रा के लिए भी पहले क़दम की आवश्यकता है उसी प्रकार मेरे स्वार्थत्याग के पथ की यात्रा के लिए विषयभोगों का त्याग पहला क़दम, पहली सीढ़ी है। विषयभोग के त्याग और अपने सिद्धांत की अटलता में विश्वास होने पर अपने पथ पर चलने की आत्मशक्ति अवश्य प्राप्त हो जाती है; परंतु उसे स्वार्थ के आक्रमणों से बचाने का फिर भी सदा प्रयत्न करने की आवश्यकता है। अच्छे-से-अच्छा घुड़सवार बुरी-से-बुरी तरह गिरता भी है। मेरे पथ का पथिक भी बिना गिरे अपने निर्दिष्ट स्थान को नहीं पहुँच सकता। कीर्ति सुनने की लालसा और बुराई सुनने से क्रोध एवं शोक, ये दोनों भी तो स्वार्थ से उत्पन्न होते हैं। इस घाटी को लाँघने और यदि इसके लाँघने में पतन हो तो उस पतन के पश्चात् और दृढ़ता से उठकर चलने की आवश्यकता है।

कमला—आप न-जाने इस संसार को किस दृष्टि से देखते हैं ? प्राचीन काल के बड़े-बड़े त्यागी ऋषि-मुनियों और राजर्षि नरेशों तथा इस समय के बड़े-बड़े नेताओं, सभी को अपनी कीर्ति सुनने

की अभिलाषा रही है, और है; किसी को अपनी बुराई अच्छी नहीं लगी, और न लगती है।

दीनानाथ—जिन्हें भी यह लालसा रही है, या है, समझ लो, वे अपने हृदय से स्वार्थ का मूलोच्छेदन नहीं कर सके; और यही कारण उनके पथभ्रष्ट होने का है। कीर्तिश्रवण की लालसा का स्वार्थ तो, कमला, विषयभोग के स्वार्थ से भी बड़ा है। कई व्यक्ति इसी लिए प्रत्यक्ष में विषयभोग का त्याग कर देते हैं कि उनकी कीर्ति होगी। भीतर-ही-भीतर वे इन विषयों को भी पूर्ण रूप से नहीं त्यागते। छिपे-छिपे वे उनका उपभोग करते हैं। छिप-कर जो कार्य किया जाता है, वही पाप है। पाप का यह घड़ा जहाँ फूटा कि ऐसे व्यक्ति पथभ्रष्ट हुए; और वह प्रायः फूटता ही है।

कमला—और जो लोग सचमुच विषयभोग त्याग देते हैं, जैसे आपने त्याग दिये हैं?

दीनानाथ—उनके हृदय में भी कीर्तिश्रवण का स्वार्थ बना रहता है। सर्वसाधारण से ऊँचे उठने का जो उद्योग करता है, उस पर सर्वसाधारण की दृष्टि लगी रहती है। कोई किसी को, जहाँ तक उससे हो सकता है, अपने से ऊपर नहीं उठने देना चाहता, अतः ऐसे ममुष्यों का सदा छिद्रान्वेषण होता है। कुछ स्वार्थी कभी-कभी इनके विरुद्ध मिथ्या अपवाद भी फैला देते हैं। चूँकि आज संसार में बुराइयों से युक्त ही अधिक मनुष्य हैं, अतः इस प्रकार के मिथ्या अपवादों पर सर्वसाधारण को शीघ्र ही विश्वास हो जाता है। जिनमें अपनी कीर्ति सुनने का स्वार्थ विद्यमान है, ऐसे

विषयभोगों को भी सचमुच त्याग देनेवाले व्यक्ति अपनी अकीर्ति श्रवण न कर सकने के कारण पथभ्रष्ट हो जाते हैं। यह स्वार्थ है, कमला, स्वार्थ! इसी स्वार्थ के वशीभूत होकर उस दिन मैंने प्रोफ़ेसरी के लिए प्रार्थनापत्र भेजा था।

कमला—फिर अब आप क्या करेंगे?

दीनानाथ—वही, जो अब तक करता था। अंतर केवल इतना ही होगा कि बिना इस बात की चिंता किये कि कोई मेरी बुराई करता है या भलाई, वही काम करूँगा। जो मेरी अकीर्ति हुई है, उसे मैं एक प्रकार की परीक्षा मानता हूँ। कमला, यह भी मेरे पथ की एक सीढ़ी थी। हृदय में निर्बलता अवश्य आई, पर विवेक ने...

कमला—मैं क्या कहूँ, आपके स्वार्थत्याग का पथ ही अद्भुत है। अभी और भी सीढ़ियाँ शेष होंगी?

दीनानाथ—यह मैं कैसे कह सकता हूँ? जब मैंने इस पथ पर चलना आरंभ किया, तब इसमें कितनी सीढ़ियाँ हैं, यह मुझे कहाँ दिखता था? पहले मैं इस पथ पर चलने के लिए विषयभोग का त्याग ही यथेष्ट समझता था, पर उसके पश्चात् तो न-जाने कितनी परीक्षाएँ देनी पड़ीं, कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं। एक-एक इंद्रिय ने विप्लव किया है, छोड़ी हुई वासनाओं का सुख स्मरण आया है, तुम्हारे और बच्चों के कष्ट ने सताया है, कदाचित् इसीलिए विवाह की इच्छा न रहते हुए भी विवाह हुआ था। अनेक लोगों ने एवं अनेक अभिन्न मित्रों तक ने मेरे पथ की नाना प्रकार की आलोचनाएँ की हैं, हँसी उड़ाई है।

कमला—पर फिर भी आपने अपना पथ परिवर्तित कहाँ किया ?

दीनानाथ—हाँ, परिवर्तित तो नहीं किया, पर अनेक बार हृदय में संदेह अवश्य उत्पन्न हुआ कि मेरा पथ ठीक है या मैं पथभ्रष्ट हूँ। अनेक बार भासित हुआ कि यह तो ऐसा पथ है, जिस पर मैं अकेला ही चल रहा हूँ, कोई साथी तक नहीं। ऐसे अवसरों पर घने जंगल में एक तंग पगडंडी पर चलनेवाले अकेले पथिक की जो दशा होती है, वही मुझे भी अपनी जान पड़ी पर......( रुक जाता है। )

कमला—पर ?

दीनानाथ—पर उन सब परीक्षाओं को देने के समय, इन सब सीढ़ियों पर चढ़ने के समय, हृदय ने इस प्रकार की निर्बलता नहीं दिखलाई। जब कीर्ति गई और अपयश हुआ, तब हृदय भी एक बार निर्बल हो गया। हर्ष की बात है, कमला, कि विवेक ने अंत में इस परीक्षा में भी उत्तीर्ण करा दिया, इस सीढ़ी पर भी चढ़ा दिया। ( कमला सिर हिलाती है ) जिस प्रकार सोने की परीक्षा के लिए काली कसौटी है, उसी प्रकार हृदय की परीक्षा के लिए भगवान् ने कदाचित् ये बाधाएँ बनाई हैं। बिना सान पर चढ़ाये जिस प्रकार रत्न में दीप्ति नहीं आती, उसी प्रकार बिना परीक्षाओं के हृदय भी कदाचित् प्रकाशित नहीं हो सकता।

कमला—चलिए, चलते जाइए, जो आपकी इच्छा हो करते जाइए। पर इसे हठ के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जा सकता।

दीनानाथ—नहीं, कमला, यह हठ नहीं है। हठ और प्रतिज्ञा-

पालन का व्यवहार चाहे एक-सा दीखे, पर दोनों में बड़ा अंतर है।

कमला—क्या अंतर है ? मुझे तो कुछ नहीं दिखता।

दीनानाथ—हठ के पीछे कोई सिद्धांत नहीं रहता, परंतु प्रतिज्ञापालन सिद्धांत पर अवलंबित रहता है। प्रतिज्ञापालक के विचार और कार्य उसे एक निश्चित लक्ष्य की ओर ले जाते हैं।

कमला—जिसे अपनी पत्नी, अपने रक्त से उत्पन्न बच्चों की चिंता नहीं.........

दीनानाथ—नहीं, कमला, मुझे तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की चिंता है, बहुत अधिक चिंता है, अपने शरीर से भी अधिक; पर, हाँ, उतनी ही, जितनी दूसरी स्त्रियों और दूसरे बच्चों की।

कमला—( घृणा से ) आप इस संसार में नहीं, स्वप्न के संसार में रहते हैं।

दीनानाथ—( कुछ सोचते हुए ) कदाचित् यह सत्य हो, परंतु स्वप्न के संसार में रहने से स्वप्न के कुछ सुखों की प्राप्ति हो जाती है। जो केवल इस संसार में रहते हैं, उन्हें तो इस संसार का दुःख ही दुःख मिलता है।

कमला—( लंबी साँस लेकर क्रोध से ) भगवान् ने आपको हृदय नहीं, पत्थर दिया है, और क्या कहूँ।

[ शीघ्रता से प्रस्थान। दीनानाथ भी कुछ सोचता हुआ जाता है। परदा उठता है। ]

---

## दूसरा दृश्य

**स्थान**—शक्तिपाल के मकान का वही कमरा।

**समय**—प्रातःकाल

[ घड़ी में आठ बजने को पाँच मिनिट हैं। यात्रा के खाकी कपड़ों में एक चमड़े का बैग हाथ में लिये मार्गरेट का प्रवेश। वह लिखने के टेबल के निकट जा बैग उस पर रखती है और बैग में से दोनों थरमामीटरों को निकाल एक को मुँह में और दूसरे को बग़ल में लगा हाथघड़ी को देखती है। ]

मार्गरेट—( कुछ देर पश्चात् मुँह का थरमामीटर निकालकर ) **ओह् ! नाइंटीएट पाइंट फ़ाइव।** ( बग़ल का निकालकर ) **नाइंटीएट पाइंट वन।** ( दोनों थरमामीटर केसों में रख राइटिंग टेबिल के पास जा दोनों को बैग में रख देती है ; फिर सोफ़ा पर बैठ नब्ज़ देखती है। ) **एट्टीवन।** ( खड़े होकर नब्ज़ देख कर ) **नाइंटी।** ( सोफ़ा पर लेटकर नब्ज़ देख कर ) **सेविंटीसिक्स। रादर एक्साइटेड।**

[ श्रीनिवास का अँगरेज़ी वस्त्रों में प्रवेश। ]

श्रीनिवास—( टोप उतारते हुए ) **गुडमॉर्निंग, मिसेज़ वर्मा।**

मार्गरेट—**गुडमॉर्निंग, गुड्मॉर्निंग, मिस्टर शीनिवैश !**

श्रीनिवास—**आप तो चलने के लिए तैयार हैं ?**

मार्गरेट—**यस, मिस्टर शीनिवैश, गोकि आज हमारा टेंप्रेचर जाडा और पल्स भी एक्साइटेड, आज टो बेड में कनफ़ाइन होने**

का माफ़िक़ हेल्थ, लेकिन हम लोग टो शिमला चलटा। वहाँ का क्लाइमेट टो बोट आच्चा।

श्रीनिवास—हाँ, हाँ, वह तो हेल्थ रिज़ॉर्ट है, और फिर मैं आपके साथ हूँ। आप जानती हैं टूर में मैं आपके हेल्थ की कितनी केयर रखता हूँ।

मार्गरेट—हाँ अब टो आपका साट घूमटे-घूमटे टीन साल का क़रीब हो गिया। आपका केयर के लिए टोहम बोट थैंकफ़ुल। हम चलटा।

श्रीनिवास—( हाथ की घड़ी देखते हुए ) मिस्टर वर्मा से तो आप मिल लीं न, और आपका लगेज तो स्टेशन गया न ? क्योंकि गाड़ी जाने में पंद्रह मिनिट ही हैं।

मार्गरेट—हाँ, हाँ, हम उससे मिल लिया, लगेज भी स्टेशन गिया। हम आपका साट चलने को एकडम टैयार। ( राइटिंग टेबिल के निकट जाकर बैग उठा श्रीनिवास के पास जाकर ) चलिए, मिस्टर शीनिवैश।

श्रीनिवास—चलिए।

[ दोनों का प्रस्थान। शक्तिपाल के दो सेक्रेटरियों का प्रवेश। दोनों का रंग साँवला है और दोनों अँगरेज़ी ढंग के कपड़े पहने हैं। दोनों की बग़लों में दो बड़े-बड़े फ़ाइल दबे हुए हैं। दोनों फ़ाइलों को लिखने की टेबल पर रख देते हैं और कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। ]

एक—( घड़ी की ओर देखकर ) वेल मिस्टर शर्मा, हम लोग पाँच मिनिट देर से आये हैं। ग़नीमत है कि मिनिस्टर साहब अब

तक नहीं आये, नहीं तो संडे को भी पाँच मिनिट देर से आने के लिए पंद्रह मिनिट की एक स्पीच सुननी पड़ती।

दूसरा—हाँ, भाई, इस मिनिस्टर ने तो आफ़त कर डाली; छुट्टी के दिन भी छुट्टी नहीं। ठीक वक्त बँगले पर आओ, सुबह आओ, रात को आओ, ठीक वक्त आफ़िस में पहुँचो, पर आफ़िस से जाने का कोई ठीक वक्त मुक़र्रर नहीं। एक-एक काग़ज़ को ठीक तरह से रक्खो, चाहे कोई रद्दी भी हो, क्योंकि न-जाने किस वक्त रेफ़रेंस के लिए कौन काग़ज़ माँगा जाय, ज़रा देर हुई कि डाँट पड़ी।

पहला—फिर जब कौंसिल का सेशन होता है, तब तो इसके सिर पर भूत सवार हो जाता है।

दूसरा—और बोलता वह हम लोगों के सिर पर है।

पहला—इस साल कौंसिल के सेशन के वक्त ही एक्ज़ीबिशन करा दी, तब तो जान जाते-जाते बची।

दूसरा—राम-राम करते-करते ये तीन साल बीतने पर आये हैं। ऐसा तो कोई मिनिस्टर नहीं हुआ।

पहला—भाई, सोशिलिस्ट मिनिस्टर है कि तमाशा ?

दूसरा—पर तीन साल की मेहनत के बाद भी यह कर क्या सका ? सोशलिज़्म एक पैर भी आगे बढ़ा ? कैबिनेट में इसकी कोई स्कीम कभी मंज़ूर नहीं होती। कौंसिल में मिनिस्टर होने के सबब यह कोई बिल वगैरह ला नहीं सकता। याद नहीं, इसकी पार्टी में से एक मेंबर, जो क़िसानों के हक़ बढ़ाने की बाबत बिल लाया था, और एक जो मज़दूरों के काम करने के दस घंटों से आठ घंटे, और

फ़ैक्टरी में काम करनेवाले लड़कों की उम्र ग्यारह साल से पंद्रह साल कराना चाहता था, दोनों अपनी सोशलिस्ट पार्टी में ही इतने बदनाम हुए कि उन्हें अपनी पार्टी का ही कोई सपोर्ट करने वाला नहीं मिला।

पहला—अरे नाम की सोशलिस्ट पार्टी है। ज़मींदारों और पूँजीपतियों से भरी हुई है। सोशलिज़्म, सोशलिज़्म चिल्लाने से ही सोशलिज़्म क़ायम नहीं हो सकता।

दूसरा—हम छोटे-छोटे सेक्रेटरियों और क्लार्कों को कोल्हू के बैलों के माफ़िक चलाने के सिवा और मिनिस्टर साहब क्या कर सके ?

पहला—कर ही क्या सकते थे ? पहले तो कोई अख़्त्यारात नहीं, दूसरे पार्टी का यह हाल, तीसरे कमिश्नरियों के कमिश्नर, ज़िलों के डिप्टी कमिश्नर और इन्हीं के डिपार्टमेंटों के योरपियन और सीनियर सेक्रेटरी तक इनकी रत्तीभर परवा नहीं करते। जो ख़ुशी होती है, करते हैं। बात यह है कि ये सब लोग जानते हैं कि उनकी सर्विस परमेनेंट है और ये मिनिस्टर रोज़ आते और रोज़ जाते हैं।

दूसरा—और थोड़े दिन हैं। इस दफ़ा के चुनाव में यह कभी नहीं जीत सकता। इतनी मेहनत करने पर भी गवर्नमेंट और पब्लिक दोनों में बदनाम हो गया है। फिर इनकी पार्टी भी न जीतेगी, क्योंकि इसके ज़्यादातर मेंबर ही इस पार्टी की तरफ़ से खड़े होना नहीं चाहते।

पहला—इस दफ़ा उसका सबसे बड़ा मददगार श्रीनिवास भी तो चुनाव के लिए कुछ नहीं कर रहा है।

दूसरा—यह क्यों ?

पहला—एक तो इन दोनों में अब बनती नहीं, दूसरे श्रीनिवास को पालिटिक्स में कोई इंटरेस्ट भी नहीं है, देखते नहीं, कौंसिल के सेशन तक में वह बहुत कम आता है और तीसरे, तुमने सुना नहीं कि बिज़नेस में उसे बड़ा घाटा है; इज़्ज़त बच जाय तो बड़ी बात है।

दूसरा—अच्छा, वह तो बड़ा अक्लमंद आदमी था।

पहला—सब अक्ल मार्गरेट की क़दमबोसी में ख़र्च हो गई। मिनिस्टर साहब की सारी तनख़्वाह वह चाट जाती है, इतना ही नहीं, श्रीनिवास को भी वह दिवालिया बनाने के फ़िराक़ में है।

[ लंबा चोग़ा ( ड्रेसिंग गाउन ) और स्लीपर पहने नंगे सिर शक्तिपाल का प्रवेश। दोनों सेक्रेटरी उसे देखकर खड़े हो जाते हैं। ]

एक—गुड मॉर्निंग सर।

दूसरा—गुड मॉर्निंग सर।

शक्तिपाल—गुड मॉर्निंग, गुड मार्निंग। (घड़ी की ओर देखकर) ओह! आएम आफुली सॉरी। एस्क्यूज़ मी मिस्टर शर्मा, ऐंड मिस्टर गुप्ता, मिसेज़ वर्मा आज शिमला जा रही थीं, इसी से कुछ लेट हो गया।

एक—दैट्स आल राइट, सर।

दूसरा—ओह! क्वाइट आल राइट, सर।

शक्तिपाल—आप लोग दस्तख़त के लिए पेपर्स ले आये हैं ?

एक—जी हाँ, सब तैयार हैं ।

[ शक्तिपाल दफ़्तर की कुरसी पर बैठता है । दोनों सेक्रेटरी अपने-अपने फाइल उठा कुर्सी के दोनों ओर खड़े हो जाते हैं । ]

शक्तिपाल—पहले आप अपने पेपर्स पुट अप कीजिए, मिस्टर शर्मा ।

एक—बहुत अच्छा । ( फाइल खोलकर एक काग़ज़ टेबल पर रखता है । )

शक्तिपाल—(चश्मा उतारकर पढ़ते हुए ) ओ ! यह तो वही लेटर है, जो कल मैंने डिक्टेट कराया था ?

पहला—जी हाँ ।

[ शक्तिपाल हस्ताक्षर करता है । वह दूसरा काग़ज़ रखता है । ]

शक्तिपाल—( उसे पढ़ते हुए ) यह तो मेरा डिक्टेट कराया हुआ नहीं है !

पहला—जी नहीं ।

शक्तिपाल—इसमें जिन काग़ज़ात का रेफ़रेंस दिया गया है, वे पेश कीजिए ।

पहला—( कुछ घबराकर ) वे तो आफ़िस में हैं ।

शक्तिपाल—( कुरसी से टिक उसकी ओर देखते हुए ) आप जानते हैं कि मैं तो सब काग़ज़ों को पढ़े बग़ैर किसी चिट्ठी पर दस्तख़त नहीं करता ।

पहला—पर इसके रेफ़रेंस के काग़ज़ात तो इतने ज़्यादा थे कि बाइसिकिल के कैरियर पर नहीं आ सकते थे ।

शक्तिपाल—तो आपको ताँगा किराया कर लेना था। अब तो इस पर कल इसी वक्त दस्तख़त होंगे, क्योंकि संडे के सबब आफ़िस की तो आज छुट्टी है। ( कुछ ठहरकर ) देखिए, मिस्टर शर्मा, आपको मेरे पास काम करते तीन साल होने आते हैं, आप जानते हैं मैं किसी काम को पैंडिंग नहीं रखना चाहता और आप हमेशा इसी तरह की ग़लती करते हैं।

[ चपरासी का प्रवेश। वह सलाम करता है। ]

चपरासी—नगरसेठ साहब तशरीफ़ लाए हैं, हुज़ूर।

शक्तिपाल—( सेक्रेटरियों से ) अच्छा देखिए मिस्टर शर्मा, और मिस्टर गुप्ता, आज बहुत देर हो गई है और कुछ लोगों से मेरे आज एंगेजमेंट्स भी हैं। बेहतर होगा कि आप दोनों कुल क़ाग़ज़ात लेकर आज रात को ठीक साढ़े आठ बजे यहीं आवें।

पहला—( उदास होकर ) बहुत अच्छा।

दूसरा—( उदासी से ) अच्छी बात है।

[ दोनों का नमस्कार कर प्रस्थान। ]

शक्तिपाल—( चपरासी से ) सेठ साहब को सलाम दो।

[ चपरासी का सलाम कर प्रस्थान। शक्तिपाल चश्मा लगाकर सोफा पर बैठ सिगरेट जलाता है। ]

शक्तिपाल—( ज़ोर से ) चपरासी! चपरासी!

[ चपरासी फिर आकर सलाम करता है। ]

शक्तिपाल—देखो, उन्हें बहुत ख़ातिर से भेजना।

चपरासी—जो हुकुम, सरकार। ( सलाम कर जाता है। )

[ घुटने तक चढ़ी हुई धोती और अँगरखा पहने, गले में दुपट्टा डाले मस्तक पर रामानंदी तिलक और सिर पर पगड़ी लगाये, साँवले रंग के मोटे से सेठ का प्रवेश। ]

सेठ—( दोनों हाथ सिर पर लगाते हुए ) **जै गोपाल, जै गोपाल मिनश्टर शाब।**

शक्तिपाल—( खड़े होकर हाथ जोड़ नमस्कार का उत्तर दे ) **बैठिए, सेठ साहब, कहिए आप अच्छी तरह हैं ? बहुत दिनों बाद आपका नियाज़ हासिल हुआ।** ( बैठता है )

सेठ—( बैठते हुए ) **पियाज तो म्हे लोग खाँवाँ ई कोनी, मिनश्टर शाब, आपने यूंई कदेई श्यूं बाश आई होशी।**

शक्तिपाल— ( मुसकराकर ज़ोर से ) **नहीं-नहीं, सेठ साहब, मेरा मतलब यह था कि आप बहुत दिनों बाद आये।**

सेठ—**हो ! मैं थोड़ो ऊँचो शुणू हूँ। आपने जद बुलायो बीं बखत तो आयो ई, मिनश्टर शाब !**

शक्तिपाल—( ज़ोर से ) **हाँ-हाँ, यह तो आपकी** ( साधारण स्वर में ) **नवाज़िश है।**

सेठ—**नुमाइश तो म्हारी कांई आपकी ही है, म्हा का बाबा ! म्हे कांई नुमाइश कर शकाँ हाँ। और भोत चोखी हुई मिनश्टर शाव, प्रागजी में इशी नुमाइश देख वा मा आई ही, बीं के पीछै तो कदेई इशी नुमाइश कोनी देखी।**

शक्तिपाल—( हँसी को रोकते हुए जोर से ) **मेरा नुमाइश से मतलब नहीं था, सेठ साहब, वह तो सचमुच अच्छी हुई, हालाँकि**

इलाहाबाद के मुक़ाबले में तो वह कुछ भी नहीं थी। इस वक्त तो मैंने यह अर्ज़ किया था कि आपकी मुझ पर हमेशा ही मेहरबानी रहती है।

सेठ—हो! मेहरबानगी तो आप लोगाँ की चाये, मिनश्टर शाब। म्हाँ लोगाँ की क्याँ की मेहरबानगी म्हाँ का बाबा!

[ शक्तिपाल सिगरेटकेस आगे करता है। ]

सेठ—( हाथ जोड़ते हुए ) मैं पिऊँ नईं हूँ, मिनश्टर शाब।

शक्तिपाल—( सिगरेटकेस हटाते हुए ) सेठ साहब, मैं फिर खड़ा हो रहा हूँ।

सेठ—( जल्दी से खड़े होकर ) क्यूँ खुरशी पर कोई जिनावर इनावर तो कोनी है क?

शक्तिपाल—( हँसी को रोकने के लिए खाँसते हुए ज़ोर से ) नहीं-नहीं, मेरा मतलब कौंसिल के लिए खड़ा होने का है। आप जानते हैं चुनाव फिर आ गया है।

सेठ—( बैठते हुए ) हो! पण मिनश्टर शाब, ई बखत तो आप खड़ा नईं होवो तो चोखी बात है। क्यूँ झगड़ा में पड़ो हो?

शक्तिपाल—( ज़ोर से ) क्यों, सेठ साहब, क्या लोग मुझसे नाराज़ हैं?

सेठ—( बग़लें झाँकते हैं ) नईं नाराज़ी की तो बात कोनी, पण मिनश्टर शाब, आप जद मने भरोसो कर बलायो है तो मने भी आप श्यूँ शाँची शाँची बात कै देनी चाये।

शक्तिपाल—ज़रूर-ज़रूर।

सेठ—अबार ऊँन्याला की मोशम मा, जद उल्टी दश्ताँ की बेमारी फैली ही, बीं बखत आप मुनश्यपाल्टी का प्रेशीडंट शाब के शागे गाँव में घूमकर हलवायाँ की दुकानां श्यूँ मिठाई फिंकवाई ही न, और फलाँ का बेपारियाँ का फल बी फिकाया हान, और कूँजड़ा की शागभाजी बी फिकाई ही न ?

शक्तिपाल—( जोर से ) ज़रूर क्योंकि हलवाइयों की दुकानों में बहुत-सी गंदी मिठाई थी, फलवाले और कूँजड़े बहुत-से सड़े हुए फल और शाकभाजी बेचते थे, उससे हैज़ा बढ़ रहा था, सेठ साहब ।

सेठ—पण लोग इतनों अबार कठे शमजे हैं, म्हाका बाबा ! लोग आप श्यूँ नाराज हो गया है, मिनश्टर शाब, कवै है आपने तो हज़ाराँ की तनखा मिले हैं, आप गरीबाँ की गरीबी कठे देखी ।

शक्तिपाल—पर, सेठ साहब, आप लोग.तो अरबन के वोटर...

सेठ—( हाथ जोड़ते हुए ) म्हारा तो आप मालक हो, मिनश्टर शाब, आम्हारी आपकी अनबन की बात कोनी ।

शक्तिपाल—( ज़ोर से ) नहीं-नहीं मेरा मतलब अनबन से नहीं था । मेरा मतलब था कि आप लोग जो शहरों में रहनेवाले हैं, उन्हें तो इन सब बातों को समझना चाहिए ।

सेठ—हो ! पण मिनश्टर शाब, लोग अतरी नई शमझे है । खैर, आप खड़ा होश्यो तो मैं तो आपकी जठे ताणी होशी मदत जरूर ही करश्यूँ ।

शक्तिपाल—मैं आपका निहायत शुक्रगुज़ार हूँ ।

सेठ—नईं नईं मिनश्टर शाब ! आप गुँवार नहीं, आप तो हर तरश्यूँ बुदी वाला हो। लोग ही गुँवार........

शक्तिपाल— ( ज़ोर से ) मेरा मतलब गँवार से नहीं था, सेठ साहब, मैं तो, देखिए, क्या कहना चाहिए, हाँ-हाँ, आपको ( और .जोर से ) धन्यवाद दे रहा था।

सेठ—हो ! ईं की काई जरूरत है म्हाका बाबा ! मैं तो आपको ई हूँ। मने तो आप कैश्यो जियांई करश्यूँ।

[ चपरासी का चाँदी की रकाबी में एक कार्ड लेकर प्रवेश। चपरासी सलाम कर, रकाबी आगे करता है। ]

शक्तिपाल—( कार्ड उठा चश्मा निकाल कार्ड को पढ़, चश्मा लगाते हुए चपरासी से ) उन्हें अच्छी तरह बैठाओ, मैं उनसे अभी मिलूँगा।

[ चपरासी का सलाम कर प्रस्थान। ]

सेठ—तो अब मने भी इजाजत होय, मिनश्टर शाब !

शक्तिपाल—( खड़े होते हुए ) बहुत ख़ूब, तो आपकी तो मदद मुझे ज़रूर ही रहेगी। ( जोर से ) और आप कोशिश करेंगे कि शहर के मारवाड़ी और महाजन वग़ैरह मुझे ही वोट दें।

सेठ—( खड़े होते हुए ) जरूर, मिनश्टर शाव, जरूर। ( जाते हुए ) जै गोपाल, मिनश्टर शाव, जै गोपाल !

शक्तिपाल—( बैठते हुए ) जै गोपाल, सेठ साहब, जै गोपाल।

[ सेठ का प्रस्थान। ]

शक्तिपाल—( जोर से ) चपरासी ! चपरासी !

[ चपरासी का प्रवेश । वह सलाम करता है । ]

शक्तिपाल—ज़मींदार साहब को बहुत ख़ातिर से भेज दो ।

[ चपरासी का प्रस्थान । एक ठिंगने कद के मनुष्य का चोगा, चपकन और पाजामा पहने तथा साफा बाँधे हुए प्रवेश । रंग साँवला है और दाढ़ी है । वह एक हाथ से जमीन तक झुककर सलाम करता है । ]

शक्तिपाल—( खड़े हो सलाम का उत्तर देते हुए ) आइए, ज़मींदार साहब, और ज़मींदार साहब ही क्यों, फ़ैक्टरी ओनर साहब भी, आइए, तशरीफ़ लाइए ।

[ दोनों बैठते हैं ]

शक्तिपाल—कहिए साहब मिज़ाज तो अच्छा है ? ( सिगरेटकेस आगे करता है । )

ज़मींदार—हुज़ूर की मेहरबानी है । (सिगरेट लेकर जलाता है ।)

शक्तिपाल—आज मैंने आपको इसलिए तकलीफ़ दी है कि चुनाव फिर नज़दीक आ रहा है ।

ज़मींदार—मैं तो हर तरह से सरकार की ख़िदमत को तैयार हूँ, लेकिन.....

शक्तिपाल—लेकिन क्या, जनाब ?

ज़मींदार—जब हुज़ूर ने मुझे अपना समझ तलब फ़रमाया है तो मेरा भी फ़र्ज़ है कि मैं सच-सच बात सरकार की ख़िदमत में अर्ज़ कर दूँ ।

शक्तिपाल—बेशक ।

ज़मींदार—गुज़ारिश यह है कि ग़रीबपरवर की पार्टी के एक मेंबर ने काश्तकारों के हुक़ूक़ों के मुताल्लिक़ एक बिल कौंसिल में पेश किया था न और एक ने फ़ैक्टरी में काम करने वाले मज़दूरों के दस घंटे से आठ घंटे कर देने की बावत।

शक्तिपाल—हाँ, ये तो बड़े अच्छे बिल थे, अफ़सोस है कि पास न हो सके।

ज़मींदार—पर, हुजूर, इन बिलों के सबब सभी ज़मींदार और फ़ैक्टरीवाले सरकार की पार्टी के ख़िलाफ़ हो गये हैं; क्या कहूँ।

शक्तिपाल—लेकिन, ज़मींदार साहब, दरअसल वे बिल ज़मींदारों और फ़ैक्टरी ओनर्स के ख़िलाफ़ नहीं थे। इस वक्त तो आप जानते हैं, ज़मींदारों और काश्तकारों, फ़ैक्टरी ओनर्स और मज़दूरों, सभी को तकलीफ़ है। जब ज़मीनों पर किसानों के हक़ बढ़ेंगे तो वे उनकी और तरक्की करेंगे, इससे ज़मींदारों की जायदाद की क़ीमत बढ़ेगी। फ़ैक्टरी के मज़दूरों के घंटे कम हो जाने से उनकी तंदुरुस्ती सुधरेगी, वे ज़्यादा काम कर सकेंगे।

ज़मींदार—यह तो जनाब का फ़रमाना बजा है, लेकिन, ग़रीबपरवर, अभी लोग इतना समझते कहाँ हैं? उन लोगों का तो अब यह पक्का यक़ीन हो गया है कि सोशलिज़्म से उनकी जायदादें ज़ब्त कर ली जायँगी।

शक्तिपाल—यह तो सोशलिज़्म का आख़िरी स्टेज है और उस वक्त तो दुनियाभर में किसी के पास भी जायदाद न रह जायगी, तब यहीं के लोगों को घबराने की क्या ज़रूरत है? फिर वह वक्त

तो ऐसे आराम का होगा, जिसका बयान तक नहीं किया जा सकता। इस वक़्त की सब तरह की तकलीफ़ें उस वक़्त रफ़ा हो जायँगी। अमीरी और ग़रीबी का कोई डिस्टिंक्शन ही न रह जायगा। ग़रीबों के सबब से आज अमीरों को भी तो तकलीफ़ है, पर वह ग़रीबों के सबब से है और उसका इलाज दुनिया में ग़रीबी नहीं रखना है, इसे वे समझते ही नहीं।

ज़मींदार—मैं तो अगर सरकार खड़े हुए तो जी-जान से सरकार की मदद करूँगा; लेकिन गुज़ारिश यह है कि......

[ चपरासी का एक रकाबी में कार्ड लिये हुए प्रवेश। सलाम कर रकाबी आगे करता है ]

शक्तिपाल—( चश्मा निकाल कार्ड पढ़ते हुए ) ओ! ट्रेड यूनियन के सेक्रेटरी साहब। ( चपरासी से, चश्मा लगाते हुए ) उन्हें बहुत अच्छी तरह बैठाओ। मैं अभी मिलता हूँ।

[ चपरासी का सलाम कर प्रस्थान ]

ज़मींदार—तो मुझे अब इजाज़त हो सरकार।

शक्तिपाल—( उठते हुए ) बहुत अच्छा। मैं आपका अज़हद शुक्रगुज़ार हूँ। ज़मींदारों और फ़ैक्टरी ओनर्स के वोट आपके ज़िम्मे हैं।

ज़मींदार—( उठते हुए ) मुझ से जहाँ तक हो सकेगा, मैं हुज़ूर की खिदमत करने में कोई बात उठा न रक्खूँगा, ग़रीबपरवर। ( ज़मीन तक झुककर एक हाथ से सलाम कर प्रस्थान। )

शक्तिपाल ( बैठते हुए ) चपरासी! चपरासी!

[ चपरासी का प्रवेश । वह सलाम करता है । ]

शक्तिपाल—सेक्रेटरी साहब को भेज दो । ( चपरासी सलाम कर जाने लगता है) देखो, (वह ठहर जाता है ।) बहुत ख़ातिर से भेजना ।

चपरासी—बहुत खूब, सरकार । ( सलाम कर जाता है । )

[ खादी के कपड़ों में एक ऊँचे पूरे व्यक्ति का प्रवेश । ]

आगंतुक—गुड मॉर्निंग, कामरेड शक्तिपाल !

शक्तिपाल—( उठते हुए ) गुड मॉर्निंग, गुड मॉर्निंग मिस्टर अगरवाला, टेक योर सीट प्लीज़ ।

[ दोनों बैठ जाते हैं । ]

अगरवाला—वेल सर, इलेक्शन इज़ अगेन कमिंग ।

शक्तिपाल—इसी लिए तो, भाई, तुमको बुलाया है । (सिगरेट-केस आगे करता है । )

अगरवाला—( मुँह बिचकाकर ) पर, भाई, इस समय तो तुम्हारी पार्टी को हमारे ट्रेड यूनियन के बहुत कम वोट मिलेंगे । ( सिगरेट जलाता है )।

शक्तिपाल—सोशलिस्ट को ट्रेड यूनियनिस्ट वोट नहीं देंगे ?

अगरवाला—बात यह है कि तुम्हारी पार्टी के एक मेंबर ने फ़ैक्टरी में काम करनेवाले लड़कों की अवस्था बढ़ाने के संबंध में यत्न किया था न ?

शक्तिपाल—ज़रूर । इस में बुरा क्या किया ? बग़ैर इसके लड़कों को तालीम किस तरह दी जा सकती है ?

अगरवाला—ठीक है, परंतु मज़दूरों को उनके लड़कों के काम

से अभी जो थोड़े-बहुत पैसे मिल जाते हैं, वे तो उन्हें देखते हैं। वे अभी इतने फार साइटेड कहाँ हुए हैं ?

शक्तिपाल—तुम लोग उनके लीडर हो, तुम्हें उनको समझाना चाहिए।

अगरवाला—भाई, यदि हम लोग अपना पोज़ीशन रखना चाहें तो हमें उन्हीं की इच्छाओं के अनुसार चलना पड़ता है। यथार्थ में हम लोग लीडर नहीं, लेड हैं। फिर एक बात और है।

शक्तिपाल—वह क्या ?

अगरवाला—( शक्तिपाल के निकट सरककर धीरे-धीरे ) चुनाव के समय उन्हें कुछ खाने-पीने को देना पड़ता है।

शक्तिपाल—( त्योरी बदलकर ) यह आप किससे बात कर रहे हैं, जनाब ?

अगरवाला—( बेपरवाही और घृणा से हँसकर ) लीजिए, आप तो तोते के समान आँख ही बदलने लगे। अजी साहब, मैं कोई ज़मीदार या सेठ-साहूकार नहीं हूँ कि आपके आँखें दिखाने से डर जाऊँ। जब आपने बुलाया, तब आपके बँगले पर आया हूँ। और आप बुलाकर मुझे अपने रूफ के ही अंदर इंसल्ट कर रहे हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि मैं किससे बात कर रहा हूँ। मैं उन्हीं से बात कर रहा हूँ, हज़रत, जिनके चुनाव में गत वर्ष श्रीनिवास साहब ने दो हज़ार रुपया हमारे यूनियन को दिया था।

शक्तिपाल—उन्होंने दिया होगा, मैंने नहीं दिया।

अगरवाला—वे आपके इलेक्शन एजेंट नहीं थे ?

शक्तिपाल—ख़ैर, जाने दीजिए उस बात को। अब श्रीनिवास से चुनाव से कोई मतलब नहीं है। इस तरह रिश्वत बाँटना और वोटरों को करप्ट करना मेरे सोशलिस्ट प्रिंसिपल्स के ख़िलाफ़ है। मैं यह सब नहीं कर सकता।

अगरवाला—तो फिर आपको ट्रेड यूनियन से ( सिर हिलाकर ) एक वोट भी नहीं मिल सकता। ( खड़े होते हुए ) गुड बाई ( जाता है )

[ शक्तिपाल उठकर इधर-उधर टहलता है। चपरासी का प्रवेश ।]

चपरासी—(सलाम कर) दीनानाथजी तशरीफ़ लाये हैं, सरकार।

शक्तिपाल—अच्छा, मैं .खुद चलता हूँ।

[ शक्तिपाल का प्रस्थान। दीनानाथ और शक्तिपाल का पुनः प्रवेश। दोनों सोफ़ा पर बैठ जाते हैं। ]

शक्तिपाल—( मुसकराते हुए ) आपको तो सिगरेट ऑफर करना ही फ़िजूल है। और किस चीज़ से ख़ातिर करूँ, यह भी समझ में नहीं आता।

दीनानाथ—मित्रों से भेंट ही आतिथ्यसत्कार के लिए यथेष्ट है। आपने मुझे आज स्मरण किया, यही मेरा आतिथ्यसत्कार है, शक्तिपालजी।

शक्तिपाल—वाजिब तो यह था कि मैं ख़ुद ही आपके पास हाज़िर होता, मगर वहाँ तो हमेशा इतनी भीड़भाड़ रहती है कि कोई बात ही होना मुश्किल है।

दीनानाथ—वह तो एक ही बात है, शक्तिपालजी, मैं सेवा में

उपस्थित हो गया। आज्ञा दीजिए, यदि मैं आपकी कोई भी सेवा कर सका तो अपने को सौभाग्यशाली समझूँगा।

शक्तिपाल—इसकी तो मुझे हमेशा ही उम्मीद रहती है। जिनसे आपका ताल्लुक़ नहीं, उनका काम भी जब आप अपना समझकर करते हैं, तब मैं तो आपका इतना पुराना दोस्त ठहरा।

दीनानाथ—मैं तो अपने को हरएक का सेवक ही समझता हूँ, शक्तिपालजी।

शक्तिपाल—आप जानते ही हैं कि कौंसिल का चुनाव नज़दीक आ रहा है। मैं फिर खड़ा हो रहा हूँ। आपकी ख़िदमात के सबब आज इस ज़िले क्या, तमाम सूबे पर आपका जो असर है, उसे मुल्कभर जानता है। मैं आपकी मदद चाहता हूँ।

दीनानाथ—आप स्वयं विचार सकते हैं कि यदि मैं आपकी कोई भी सेवा कर सकूँ तो मुझे कितना हर्ष हो, परंतु जो आज्ञा आप मुझे दे रहे हैं, उस संबंध में तो कुछ भी करना मेरे लिए संभव नहीं है।

शक्तिपाल—क्यों, क्या मैंने अपना काम ईमानदारी से नहीं किया है ?

दीनानाथ—पूरी ईमानदारी से शक्तिपालजी, मैं जानता हूँ, आज सारे देश में आपसे अधिक सच्चा और ईमानदार कोई मिनिस्टर नहीं है।

शक्तिपाल—तब क्या आप मुझे मिनिस्टरी और कौंसिल के लायक़ नहीं समझते ?

दीनानाथ—आपकी लायक़ी पर मुझे न कभी संदेह था, और न आज है।

शक्तिपाल—फिर ?

दीनानाथ—ये कौंसिलें और कौंसिलों के ये पद आपके योग्य नहीं हैं।

शक्तिपाल—( सिगरेट जलाकर मुसकराते हुए ) यह तो वही पुरानी बहस निकल आई, दीनानाथ जी, मैं फिर कहता हूँ मौजूदा हालत में भी इन कौंसिलों के सिवा मुल्क की ख़िदमत करने का और कोई रास्ता नहीं है।

दीनानाथ—यही तो मतभेद का प्रश्न है। आरंभ ही से आप का और मेरा इस संबंध में मतभेद रहा है, पर अब तो आपने इसका अनुभव भी कर लिया; क्षमा कीजिएगा, यदि मैं पूछूँ कि इन तीन वर्षों में आपके इस कार्य का क्या फल निकला ?

शक्तिपाल—उसका सबब दूसरा है, दीनानाथजी, मेरी पार्टी से ज़्यादातर ऐसे लोग गये थे, जो सच्चे दिल से सोशलिस्ट ख़यालातों के नहीं थे। इस दफ़ा मैं इस तरह के लोगों को खड़ा ही न करूँगा।

दीनानाथ—तो जिन्हें आप खड़ा करेंगे, वे सफल ही न होंगे।

शक्तिपाल—क्यों ?

दीनानाथ—इसलिए कि आज इस देश की जनता पर ऐसे ही लोगों का प्रभाव है, जो साम्यवादी नहीं हैं। ज़मींदार, सेठ-साहूकार इन्हीं सबका लोगों पर प्रभाव है और साम्यवाद इन सबके स्वार्थों के विरुद्ध है।

शक्तिपाल—लेकिन क्या आप यह नहीं मानते कि गुज़िश्ता तीन सालों में इस तरह के लोगों का असर घटा है।

दीनानाथ—थोड़ा-बहुत चाहे घटा हो, पर इतना नहीं घटा कि आप सच्चे साम्यवादियों को चुनाव में सफल करा सकें।

शक्तिपाल—इसी तरह धीरे-धीरे कौंसिल में कोशिशें होने से इनका असर कम होता जायगा।

दीनानाथ—तो क्या आप यह समझते हैं कि गत तीन वर्षों के कौंसिल के कार्य से इस प्रकार के लोगों का प्रभाव घटा है?

शक्तिपाल—बेशक। मेरी पार्टी के कुछ सोशलिस्ट मेंबरों ने जो सोशलिज़्म को आगे बढ़ाने की कौंसिल में कोशिशें की और उनकी कोशिशों का जो प्रोपेगैंडा किया गया, ख़ासकर उसी का यह नतीजा है। हाँ, आपके कामों से भी सोशलिज़्म के ख़याला-लातों को ज़रूर मदद मिली है।

दीनानाथ—इसमें भी मेरा आपसे मतभेद है।

शक्तिपाल—कैसा?

दीनानाथ—कौंसिल में जो कुछ भी हुआ है, उसका कोई भी प्रभाव जनता पर नहीं पड़ा।

शक्तिपाल—( आश्चर्य से ) अच्छा!

दीनानाथ—बात यह है कि कौंसिलों में इस संबंध में जो कुछ हुआ है, उसे छपवाकर आपके दल ने बटवाया भर है, पर यहाँ पर तो सौ में नब्बे मनुष्य अशिक्षित हैं। जो शिक्षित हैं, वे आपके सिद्धांतों के विरुद्ध हैं, अतः उन्होंने, जो कुछ आपके दल के

कुछ सदस्यों ने किया, उसके मनमाने अर्थ लगाकर लोगों को समझाया।

शक्तिपाल—मुझे तो कैबिनेट में रहने के सबब इतना वक्त नहीं मिलता कि मैं दौड़-धूपकर इन सब बातों को समझा सकूँ, इसलिए जो कुछ वहाँ होता है, उसे छपवाकर बटवाने के सिवा और मैं क्या कर सकता था ?

दीनानाथ—मैं इसे मानता हूँ और चूँकि आपको जनता के संपर्क में आने का अवसर नहीं मिलता, इसीलिए आप भूल में हैं कि कौंसिल-कार्य के कारण ही जनता साम्यवाद के पक्ष में हो रही है।

शक्तिपाल—लेकिन, दीनानाथजी, आपका तो आम लोगों से बहुत ज़्यादा ताल्लुक़ है। कम-से-कम मेरे निस्बत इस तरह की ग़लतफ़हमियों को आपको तो दूर करना चाहिए।

दीनानाथ—इसके लिए मैं तैयार हूँ और मैं सदा यह करता भी हूँ।

शक्तिपाल—( प्रसन्न होकर ) तो फिर मैं अब तक के तमाम काम की तफ़सील और अपना इलेक्शन मैनिफ़ैस्टो वग़ैरह आपकी ख़िदमत में भेज दूँगा। आप इसके मुताल्लिक़ लोगों को सही-सही बात कह दें। इतना ही काफ़ी होगा।

दीनानाथ—यह मैं बराबर कर दूँगा, परंतु इसी के साथ एक बात मुझे और कहनी पड़ेगी।

शक्तिपाल—वह क्या ?

दीनानाथ—यह कि आपके इतने ईमानदार और कार्यदक्ष होते

हुए भी इन कौंसिलों से कोई लाभ न होगा, क्योंकि यदि साम्यवादी दल के लोग कौंसिल में पहुँच भी गये, तो कौंसिलों को कोई अधिकार नहीं, वे कुछ नहीं कर सकते।

शक्तिपाल—यह तो फिर डिफ़रेंस आफ़ ओपिनियन का सवाल आ गया।

दीनानाथ—यह तो है ही, शक्तिपालजी, फिर एक बात और है।

शक्तिपाल—वह क्या ?

दीनानाथ—आपको तीन हज़ार रुपये वेतन मिलता था और आप सबका सब अपने रहन-सहन में ख़र्च कर देते थे, इससे लोगों को बड़ा असंतोष है।

शक्तिपाल—क्यों ? उस पर मेरा हक़ था। मैं अपनी तनख़्वाह का चाहे कुछ भी करूँ। क्या आप कह सकते हैं कि मिनिस्टर रहते हुए तनख़्वाह के सिवा किसी तरह का भी ज़ाती फ़ायदा उठाने की मैंने कोशिश की ?

दीनानाथ—फूटी कौड़ी भी आपने इधर-उधर की, यह यदि कोई भी कहे तो मैं कह सकता हूँ कि वह झूठा है। सभा में भाषण द्वारा या पत्रों में लेख द्वारा या जिस प्रकार आप कहें आपका समर्थन करूँगा; पर शक्तिपालजी, आज जब देश के अधिकांश लोगों को यथेष्ट भोजन और वस्त्र नहीं मिल रहे हैं, तब हम में से किसी को यह अधिकार नहीं कि हम जनता की इतनी बड़ी रक़म अपने पर ख़र्च करें और आपके सिद्धांतों के अनुसार भी तो यह एक प्रकार से पूँजीवाद का समर्थन है।

शक्तिपाल—सोशलिज़्म के क़ायम होने के बाद अगर मैं ऐसा करूँ तो। जब तक सोशलिज़्म क़ायम नहीं हो जाता, तब तक ज़ाती कुर्बानी फ़िज़ूल है, यह मैंने आपसे कई दफ़ा कहा है। फिर, दीनानाथजी, अगर मेरी जगह कोई दूसरा होता, तब भी तो उसे यही तनख़्वाह मिलती न ? मेरी पार्टी न भी गई तो कौंसिल की सीटें ख़ाली न रहेंगी, कोई-न-कोई तो जावेगा ही ?

दीनानाथ—इसी लिए में आपका विरोध नहीं करता। सन् १९२३ के चुनाव में भी मैं तटस्थ था और सन् १९२६ के इस चुनाव में भी उसी प्रकार तटस्थ रहूँगा; पर जब मुझे इस कार्यक्रम पर विश्वास नहीं है, तब आपका समर्थन किस प्रकार करूँ, यह आप ही बता दीजिए ?

शक्तिपाल—( लंबी साँस लेकर ) आपको अपने उसूलों के ख़िलाफ़ चलाकर मैं आपसे हरगिज़ किसी तरह की मदद नहीं लेना चाहता दीनानाथजी, मैं इतना ख़ुदग़र्ज़ नहीं हूँ।

दीनानाथ—यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

शक्तिपाल—आज दीनानाथजी, मैंने कई हज़रात को अपनी मदद के लिए बुलाया था, पर सबसे मुझे बड़ी नाउम्मीदी हुई, फिर भी मैं नाउम्मीद नहीं हूँ। ईमानदारी से किया हुआ काम, कामयाबी न होने पर भी, दुनिया में फ़िज़ूल नहीं जा सकता, इसका मुझे यक़ीन है। चुनाव का तमाम काम अब मैं अकेला ही करूँगा और मुझे यक़ीन है कि मैं ज़रूर कामयाब होऊँगा।

दीनानाथ—आपके साहस को धन्य है। शक्तिपालजी, ईमान-

दारी से किया हुआ कार्य असफल होने पर भी श्रेष्ठ ही होता है, यह मैं मानता हूँ, पर यदि उसी प्रकार का असफल कार्य, उसी असफलता के मार्ग से किया जाय तो उसमें निरर्थक ही समय जाता है।

शक्तिपाल—हालाँकि आपको थोड़ी बहुत कामयाबी हासिल हुई है, पर मुआफ़ कीजिए मेरी राय आपके मुत्तफ़िक़ नहीं। सियासी अख़्त्यारात के ज़रिए, जो कुछ आपने इतने सालों में किया है, वह एक दिन में किया जा सकता है।

दीनानाथ—एक दिन में लोकमत तैयार नहीं किया जा सकता, पर राजनीतिक अधिकारों से बहुत कुछ हो सकता है, इसे मैं अस्वीकृत नहीं करता। सारा प्रश्न यह है कि जब तक वे अधिकार प्राप्त नहीं होते, तब तक क्या किया जाय? (कुछ ठहरकर) अच्छा तो अब आज्ञा देंगे?

शक्तिपाल—आपसे जाने के लिए क्योंकर कहूँ? हालाँकि आपकी राय से मैं मुत्तफ़िक़ नहीं, पर न-जाने क्यों आपके पास बैठने और आपसे बातें करने में एक अजीब क़िस्म की राहत मिलती है।

दीनानाथ—यह आपकी कृपा है, शक्तिपाल जी, जब आज्ञा होगी तभी उपस्थित हो जाऊँगा।

[ दीनानाथ उठने लगता है। शक्तिपाल भी खड़ा होता है। परदा गिरता है। ]

## तीसरा दृश्य

**स्थान**—सेवाकुटी का बाहरी मैदान

**समय**—संध्या

[ कमला और सरला का प्रवेश । ]

सरला—बहन, मैं तो जब-जब यहाँ आती हूँ, तब-तब उसी मुक़दमे का स्मरण हो आता है। इतनी लज्जा आती है कि क्या कहूँ, पर उस पाप का प्रायश्चित्त यहाँ आने और इस सेवा-पथ के कार्य में योग देने के अतिरिक्त और क्या है ?

कमला—उस बात को भूल जाओ, सरला, वर्षों बीत गये। और फिर मैं तो समझती हूँ कि वह मुक़दमा चलाकर श्रीनिवासजी ने हमारा उपकार ही किया था ; इस जनता का सच्चा स्वरूप दिखा दिया था। उनके हृदय पर इसका प्रभाव भी पड़ा था, पर तुम तो अब उन्हें अच्छी तरह से जानने लगी हो।

सरला—हाँ, बहन, मैं तो उन्हें मनुष्य न मानकर देवता मानती हूँ। ज्ञान के वे केंद्र और कर्म के वे क्षेत्र हैं। ज्ञान का सच्चा उपार्जन और कर्म का ठीक दिशा में अनुष्ठान ही मनुष्य को देवता बना देता है, क्योंकि ज्ञान का लक्ष्य सत्य, और कर्म का नीति है। दोनों का अंतिम परिणाम परमार्थ की प्राप्ति है, जो सेवा से ही होती है। वे इसी में संलग्न हैं। देखा नहीं, इसी रहस्य को समझने और अपने पथ पर अटल रहने के कारण जनता की वह अकीर्ति

ग्रहण के सदृश किस प्रकार निकल गई और वे सूर्य के समान फिर से किस प्रकार चमकने लगे ?

कमला—हाँ, तुम कदाचित् ठीक ही कहती होगी। पर बात यह है कि "जाके पैर न फटी बिबाई, सो का जानै पीर पराई।"

सरला—लो, तुम तो फिर उसी प्रकार बातें करने लगीं। न जाने कितने जीवों को उनके चरित्र और उपदेश से शांति मिल रही है, पर तुम्हें अभी भी नहीं।

कमला—मेरा दुर्भाग्य हो सकता है।

सरला—मुझ ही को देखो, कमला, मेरी जो सारी संपत्ति नष्ट हो रही है, वे जो इस प्रकार मार्गरेट को लिये हुए सारे देश में चक्कर लगा रहे हैं, इन सब दुःखों में मुझे उन्हीं के चरित्र को देख, इन्हीं के उपदेशों को सुन, शांति मिलती है। मैंने तो यहाँ दंड के रूप में, एक पाप के प्रायश्चित्त के निमित्त, आना आरंभ किया था, पर वह दंड सुख में परिणत हो रहा है।

कमला—मुझे तो तुम्हारा सुख देखकर आश्चर्य ही होता है।

सरला—मुझको ही नहीं, पर न-जाने कितने, और कितने प्रकार के दुखियों को यहाँ शांति पहुँच रही है। तुम्हारे पति केवल निर्धन दुखियों की ही सेवा नहीं कर रहे हैं, धनवान दुखियों की भी सेवा कर रहे हैं, चरित्रहीन दुखियों की भी सेवा कर रहे हैं। इसी कारण तो उनके पास केवल किसान और मज़दूरों का ही नहीं, वरन् बड़े-बड़े ज़मींदारों और सेठ-साहूकारों का भी जमघट लगा रहता है। तुम तो सदा यही समझती हो कि निर्धन ही दुखी

हैं, पर मैं फिर तुमसे कहती हूँ कि धनवानों के दुःख निर्धनों के दुःखों से कहीं अधिक होते हैं।

कमला—तुम्हारी यह बात कभी पूर्ण रीति से मेरी समझ में नहीं आई।

सरला—क्योंकि तुम्हें उस जीवन का अनुभव नहीं है। धनवानों के घरों के षड्यंत्र और पापों का तुम्हें कहाँ अनुभव? कहीं बाप दुखी है तो कहीं बेटा, कहीं पति दुखी है तो कहीं पत्नी, कहीं भाई दुखी तो कहीं बहन और कहीं सारा घर। जब किसी घर की आय आवश्यकता की पूर्ति के अनुसार ही रहती है, तब सब लोग सच्चरित्र रह संतोष के साथ उसे बाँटकर सुख से खा लेते हैं, पर जब आवश्यकता से अधिक संचय होता है, तब उस संचय से न-जाने कितने पापों की उत्पत्ति होती है और उसके बँटवारे के लिए षड्यंत्रों और झगड़ों की सृष्टि।

कमला—कहीं-कहीं होता होगा?

सरला—कहीं-कहीं नहीं, कमला, सर्वत्र यही दशा है। फिर जब कभी कोई धनवान घर निर्धन होने लगता है, और ध्यान रहे यह सदा होता है, तब उस घर के धनवानों के दुःखों का वर्णन नहीं हो सकता।

कमला—हाँ, तब दुःख अवश्य होता होगा।

सरला—ऐसा-वैसा दुःख नहीं होता, महान् दुःख होता है, महान्। किसी को अपने भोगे हुए विलासों का स्मरण और भावी कष्टों की कल्पना कँपा देती है। किसी को अपनी मान-मर्यादा

का ध्यान आकर, वह अपना मुख समाज को किस प्रकार दिखा सकेगा, यह विचार व्यथित कर देता है। कोई यह सोचता है कि उसने या उसके पूर्वजों ने यह संपत्ति कितनों का पेट काट कर उपार्जित की थी। उस समय उसे अपनी संगमरमर की ऊँची-ऊँची श्वेत अट्टालिकाओं की सफ़ेदी के पीछे न जाने कितने निर्धनों का रक्त दिखाई देता है, अपने दीर्घकाय उद्यानों में लटकते हुए लाल लाल और पीले-पीले फलों के पीछे न-जाने कितने कँगलों की छिपी और रक्त से सनी हुई रोटियाँ दिखती हैं। उस समय अपने जाते हुए धन को पुन: निर्धनों को बाँट देने के लिए उनके हृदय में जैसी छटपटाहट होती है और यह करने में अपने को असमर्थ पा जैसा महान् क्लेश होता है, उसका वर्णन नहीं हो सकता, बहन।

कमला—पर जब धन बढ़ता है, तब वैसा ही आनंद भी तो होता होगा ?

सरला—वह भी नहीं कमला, बढ़ने और घटने दोनों में ही दु:ख-ही-दु:ख है। जिसके घर में धन बढ़ता जाता है, उसकी तृष्णा बढ़ती जाती है, संतोष उसे कभी होता ही नहीं, और धीरे-धीरे उसकी आत्मा पर इस बढ़ते हुए धन का इतना बोझ पड़ता है कि उसके कारण ही वह तिलमिला उठता है। कमला, इस धन के उपार्जन में दु:ख, इसकी रक्षा में दु:ख, इसके व्यय में दु:ख, इसके नाश में दु:ख। मुझे तो धन और दु:ख, ये दोनों पर्यायवाची शब्द जान पड़ते हैं। धनवानों के कष्टों की कल्पना करने का भी यत्न करो।

कमला—अब ये बातें कुछ-कुछ तो मेरी समझ में भी आने लगी हैं, पर बहुत ही कम।

सरला—कुछ वर्ष पूर्व एक दिन जब मेरे गृह में तुमने अपने दुःखों का वर्णन किया था और मैंने उनकी प्रशंसा की थी और तुम्हारे नेत्रों में आँसू आ गये थे, उस समय मुझे स्वयं अपने पर बड़ी ग्लानि हो आई थी, मैंने तुमसे क्षमा माँगी थी। पर आज तो मेरे दुःख इतने बढ़ गये हैं, साथ ही दीनानाथजी से मुझे इतनी शांति मिली है कि मैं अपने संपूर्ण बल के साथ कह सकती हूँ कि तुमसे अधिक भाग्यवान और कोई स्त्री नहीं हो सकती, जिसे ऐसा पति प्राप्त हुआ हो।

[ दौड़ते हुए ६-७ वर्ष के एक बालक का प्रवेश। बालक बड़ा सुंदर है, खादी का जाँघिया और कुरता पहने है। सिर पर गांधी टोपी है। ]

बालक—( कमला से ) माँ, चलो, शीघ्र चलो, मेरे बाल-समाज की प्रार्थना तो सुन लो।

सरला—अच्छा, तुमने बाल-समाज स्थापित किया है ?

कमला—क्या पूछती हो, यह तो उनसे भी बड़ा महात्मा होगा; पूत के लक्षण पालने में ही दिख जाते हैं।

सरला—और, बहन, अपने महिला-समाज के भी तो एक दिन दर्शन कराओ। मैंने आज ही सुना कि तुमने भी महिला-समाज स्थापित किया है। इन दिनों कुछ समय से नहीं आ सकी थी, इसी बीच यहाँ दो नवीन संस्थाओं का जन्म हो गया।

कमला—( सिर नीचा कर ) महिला-समाज तो अभी बहुत ही नया है, बहन, उसे क्या देखोगी ?

सरला—नहीं नहीं, देखना क्या, मैं उसकी सदस्या बनूँगी और तुम्हारी उस कार्य में सहायता करूँगी। ( मुसकराकर ) अंत में तुम्हें भी महिला-समाज स्थापित करना ही पड़ा, क्यों ?

कमला—नरक का कीड़ा नरक में रहते-रहते उसमें ही सुख मानने लगता है। वहीं के जीवों के समान आचरण भी करने लगता है।

सरला—फिर वही बात ! फिर वही बात ! आह ! क्या कहती हो, बहन, क्या कहती हो ? तुम्हारा जीवन नरक का जीवन ! नहीं-नहीं, यह स्वर्ग का जीवन है, और जिस संपत्तिशाली जीवन को तुम सुख का जीवन समझती हो, वह नरक का जीवन है। भगवान् की कैसी माया है कि जिसे तुम नरक का जीवन और मैं स्वर्गका जीवन समझती हूँ वह तुम्हें दिया है और जिसे तुम स्वर्ग का जीवन और मैं नरक का जीवन समझती हूँ वह मुझे मिला है।

बालक—माँ, तुम तो देर कर रही हो, हमारे समाज में ठीक समय पर प्रार्थना आरंभ हो जाती है।

कमला—चलो, चलो, तुम्हारे समाज में चलती हूँ, बेटा, सच तो यह है कि तुम्हारे पिता के वर्षों के कार्य का भी मेरे मन पर प्रभाव न पड़ा, पर तुम्हारे दिनों के कार्य का पड़ रहा है।

सरला—देख लेना, यह बालक तुम्हारे इस नरक को स्वर्ग में

परिणत करके रहेगा। ( बालक से ) क्यों मुझे अपने बाल-समाज में न ले चलोगे?

बालक—हाँ-हाँ, चलिए, आप भी चलिए।

[ तीनों का प्रस्थान। परदा उठता है। ]

## चौथा दृश्य

**स्थान**—टाउन हॉल

**समय**—संध्या।

[ तीन ओर दीवालें हैं, जो सफेद कलई से पुती हैं। तीनों ओर की दीवालों में अनेक दरवाजे और खिड़कियाँ हैं, जिनके किवाड़ों में काँच लगे हैं। सभी दरवाजे और खिड़कियाँ खुली हैं, जिनसे बाहर के उद्यान का कुछ भाग दिखाई देता है, जो अस्त होते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों से आलोकित है। हॉल की छत से बिजली की बत्तियाँ और पंखे भूल रहे हैं। फ़र्श पर बिछावन है, उस पर सभी प्रकार के लोग बैठे हैं। सामने एक तख़त है। उस पर ग़लीचा बिछा है। ग़लीचे पर एक कुर्सी और एक टेबल रक्खी है। टेबल पर टेबिलक्लाथ है और उस पर फूलदान में फूल सजे हैं। ]

ट्रेड यूनियन का मंत्री—( खड़े होकर ) **महाशयो ! हज़रात ! लेडीज़ ऐंड जेंटलमेन ! मैं प्रस्ताव करता हूँ, तजवीज़ पेश करता हूँ, रिज़ोल्यूशन मूव करता हूँ कि आज की सभा के सभापति, सदर, प्रेसीडेंट हमारे यहाँ के पारसी सेठ साहब मिस्टर वर्किंग बाक्सवाला बनाये जावें।** ( बैठ जाता है। )

एक आदमी—( खड़े होकर ) मैं इस तजवीज़ की ताईद करता हूँ।

[ एक मोटा-सा वृद्ध पारसी, जो सफेद ट्रिल व के पारसी कालर का कोट और उसी कपड़े का पतलून पहने तथा सिर पर ऊँची काली पारसी पगड़ी लगाये है, उठकर कुर्सी पर बैठता है। ताली बजती है। ]

वर्किंग बाक्सवाला—( खड़े होकर ) आपकूँ मालुम है कि वोटरों का ये मीटिंग इस बात कूँ ते कर देने कूँ बुलाया गया है कि इलेक्शन में किसकूँ वोट देना। अब इस मामले कूँ आपकूँ ट्रेड यूनियन का सेक्रेटरी साब मिस्टर अगरवाला समजायगा। ( बैठ जाता है )

अगरवाला—( खड़े होकर, इधर-उधर घूमते, हाथ हिलाते पैर पटकते हुए ) सभापति महोदय! जनाबे सदर! मिस्टर प्रेसीडेंट! महाशयो! हज़रात! लेडीज़ ऐंड जेंटलमेन! आज जिस बात का आपको निर्णय करना है, जिस बात का तस्फ़िया करने के लिए आप यहाँ तशरीफ़ लाये हैं, जिस सब्जेक्ट पर आपको डिसीशन देना है, वह बड़ा आवश्यक प्रश्न है, बहुत बड़ा अहम मसला है, आपके लाइफ़ ऐंड डेथ का क्वेश्चन है।

कुछ व्यक्ति—हिअर हिअर, हिअर हिअर।

अगरवाला—जिसे आप तीन वर्ष के लिए, तीन सालों के लिए, फ़ार थ्री लांग इयर्स, माइंड दैट, धारासभा में निर्वाचित कर भेजते हैं, क़ानून बनाने की मजलिस में चुनते हैं, कौंसिल के लिए इलैक्ट करते हैं, उसे फिर आप तीन वर्ष के पूर्व, तीन सालों के पहले,

बिफ़ोर थ्री इयर्स, उस पद, उस ओहदे, उस पोजीशन से हटा नहीं सकते, अलग नहीं कर सकते, रिमूव करना इंपॉसिबल हो जाता है।

कुछ व्यक्ति—ज़रूर, ज़रूर।

अगरवाला—वह लगातार, मुतवातिर, कंटीन्युअसली, तीन वर्षों तक, तीन सालों तक, फ़ार थ्री लांग इयर्स, माइंड दैट, आपका प्रतिनिधि, आपका नुमाइंदा, आपका रिप्रेज़ेंटेटिव रहता है।

कुछ व्यक्ति—बेशक, बेशक।

अगरवाला—गत चुनाव में आपने जिस साम्यवादी दल को निर्वाचित किया था, जिस...देखिए, क्या कहते हैं, ख़ैर, सब लोगों को एक-सा कर देनेवाले जिस फ़िरक़े को चुना था, जिस सोशलिस्ट पार्टी को इलैक्ट किया था, उसने आपके हितों की कहाँ तक रक्षा की है, आपके हुक़ूकों की कहाँ तक हिफ़ाज़त की है, आपके इंटरेस्ट्स को कहाँ तक सेफ़गार्ड किया है, इस पर आपको ध्यान देना चाहिए, ग़ौर फ़रमाना चाहिए, कंसीडर करना चाहिए।

कुछ व्यक्ति—ज़रूर, ज़रूर।

अगरवाला—यह दल, यह फ़िरका, यह पार्टी, केवल कहने के लिए, सिर्फ़ नाम के लिए, ओनली इन नेम, साम्यवादी है, सोशलिस्ट है। यथार्थ में, दरहक़ीक़त, इन रिअलटी, इसके सब सदस्य, नुमायंदे, मेंबर्स, स्वार्थी हैं, ख़ुदग़रज़ हैं, सैलफ़िश हैं।

कुछ व्यक्ति—हिअर हिअर, हिअर हिअर।

अगरवाला—इतना ही नहीं महाशयो! इतना ही नहीं

बिरादरान ! इतना ही नहीं लेडीज़ ऐंड जेंटलमेन ! सब धूर्त और पाखंडी हैं, सब धोखेबाज़ और दग़ाबाज़ हैं, सब ट्रेटर्स और स्काउंड्रल्स हैं ।

कुछ लोग—हिअर हिअर, हिअर हिअर ।

अगरवाला—इन्होंने गत तीन वर्षों तक कितना लाभ उठाया, गुज़िश्ता तीन सालों में कितनी ख़ुदग़र्ज़ी की, हाउ सैलफ़िश दे हैड बीन फ़ार दि लास्ट थ्री इयर्स, इस पर थोड़ा-सा विचार कीजिए, तह में जाकर ज़रा ग़ौर फ़रमाइए, थिंक ओवर दी होल प्रॉबलेम् ।

कुछ लोग—बेशक, बेशक ।

अगरवाला—देखिए, सज्जनो ! हज़रात ! लेडीज़ ऐंड जेंटलमेन ! इनके लीडर मिस्टर शक्तिपाल, जो अपने को कॉमरेड कहते हैं, सोशलिस्ट बतलाते हैं, कहते हैं सब संपत्तिशालियों, जायदादवालों, प्रापर्टी होल्डर्स की संपत्ति समाज की हो जाना चाहिए, मुल्क की हो जाना चाहिए, नेशनलाइज़ कर डालना चाहिए, सबकी आय बराबर हो जाना चाहिए, सबकी आमदनी एक-सी तक़सीम हो जाना चाहिए, सबकी इनकम का ईक्वल डिस्ट्रीब्यूशन हो जाना चाहिए, सबके भोजन-वस्त्र और घर, खाना-कपड़े और मकान, फूड क्लोद ऐंड हाउसिंग एक-से हो जाना चाहिए, उनकी ही दशा देखिए, उनके ही हाल पर ग़ौर फ़रमाइए, लुक ऐट हिज़ आन वे आफ़ लिविंग ।

एक आदमी—अरे, तीन हज़ार रुपये महीना चुपचाप जेब में रख लेता है ।

दूसरा—बड़ा अच्छा खाना खाता है, विलायत के बावर्ची का बनाया हुआ।

तीसरा—और पेरिस के बने कपड़े पहनता है।

चौथा—उम्दा-से-उम्दा बँगले में रहता है।

कुछ व्यक्ति—शेम, शेम, शेम, शेम।

अगरवाला—बिलकुल ठीक। आप लोग स्वयं ही सब कुछ जानते हैं, खुद ही सब हालात से वाक़िफ़ हैं, यू आल हैव ए कीन इन साइट। साम्यवाद, सोशलिज़्म का राज, उसकी हुकूमत, उसका रेन यों हो सकता है?

कुछ लोग—हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं।

अगरवाला—उनके शेष सब लोग भी, बाक़ी के हज़रात भी, दि अदर मेंबर्स आलसो, ऐसे ही हैं। अधिक भाषण की आवश्यकता नहीं है, ज़्यादा लंबी तकरीर की ज़रूरत नहीं है, नो लांग स्पीच इज़ रिक्वायर्ड। कहिए आप इनको वोट देंगे?

ज़ोर की आवाजें—कभी नहीं, कभी नहीं।

अगरवाला—तो अब महाशयो! हज़रात! लेडीज़ ऐंड जेंटल-मेन! मैं एक प्रस्ताव आपकी सेवा में उपस्थित करता हूँ, एक तजवीज़ आपकी ख़िदमत में पेश करता हूँ, एम मूविंग ए रिज़ोल्यू-शन नाउ। (जेब में से एक काग़ज़ निकालकर पढ़ता है।) "यह मतदाताओं की सभा निश्चय करती है कि श्रीयुत शक्तिपाल वर्मा का साम्यवादी दल स्वार्थियों का एक गुट है, अतः अगले निर्वाचन में उसे कोई मत न दे।" उर्दू और अँगरेज़ी में इसका यह मतलब.....

ज़ोर की आवाजें—हम सब समझ गये, सब समझ गये।

अगरवाला—अच्छी बात है। ( बैठता है, ताली बजती है। )

वर्किंग बाक्सवाला—( खड़े होकर ) अब इस रिज़ोल्यूशन कूँ मिस्टर विनयकुमार मजूमदार टेका आएगा। ( बैठ जाता है। )

एक बंगाली—( खड़े होकर ) शॅभापॅती मॅहाशॅय ! और मॅहाशॅय लोगो ! हॅम ईश रिज़ोल्यूशन का मॅन से शैकिंड कॅरता हूँ। ( कुछ तालियाँ बजतीं है ) हमारा शुजॅलां शुफॅलां मॅलयॅज शीतलां जोठो बंगभूमि है, ऊशका लोग हॅमारा बंगला भाई जोठो शेक्रेटरियॅट में काम कॅरता ऊन शॅब लोग शे हॅम खूब ठो मिलता हूँ। ऊन शॅब लोग को ईन अॅपकंट्री का शाला खोट्टा लोग का ईश सोशलिस्ट पार्टी और ऊशका लीडर ने खूब ठो तंग किया है।

कुछ व्यक्ति—शेम शेम।

बंगाली—ऊनका रॅबिबार का बी छुट्टी नेई। रात-रात खूब ठो काम कॅरना पॅड़ता है। ( हाथ हिलाकर ) कोई बंगला भाई ईश पार्टी को वोट नेई दे। ( बैठ जाता है, ताली बजती है। )

वर्किंग बाक्सवाला—( खड़े होकर ) अब इस रिज़ोल्यूशन कूँ सरदार निहालसिंह टेका आयेगा। ( बैठ जाता है। )

एक सिख—( हाथ में मोटा-सा डंडा ले खड़े होकर ) अरे, इक भी हुश्यार ठेकेदार इस पार्टी दे नेड़े नई जायगा। पी० डबल्यू० डी० में इक दो ठेकदाराँ दी ईमार्त गिराई हो, हजाराँ दी गिरा दई।

कुछ व्यक्ति—शेम शेम।

सिख—( आँख और हाथ से इशारा करता है। ) क्यूँ पंजाबी भाई ! बात समज लई।

कुछ व्यक्ति—समज लई।

सिख—अगर कोई नामर्दा डर दे वोट देने जावे, तो उस दी ना सुणो। बहादरी से इस तराँ ( सोटा घुमाकर ) इक्क दो तीन। सोटे दा कम बड़ा ओखा है। सत श्री अकाल। ( बैठता है। )

जनता—बोले सो निहाल।

वर्किंग बाक्सवाला—( खड़े होकर ) अब इस रिज़ोल्यूशन कूँ उरकुड़ा पँवार टेका आयेगा। ( बैठता है। )

एक मराठा—( खड़े होकर अपनी बड़ी-सी लाल पगड़ी सम्हालते हुए ) पोलपाट लाटणा लेकर घर में पतल्या पतल्या पोल्या लटवाला और खाता है, चांगला-चांगला कापड़ पेनता है, मोठ्या-मोठ्या बंगल्या में रेता है और सोशलिस्ट बनता है। कोलसा जितका उगालावा तितका काला। और ऊसका साथी—सुई आगे दोरा।

कुछ व्यक्ति—शेम शेम !

मराठा—रांगड़ा कहीं का। ऊसको और ऊसका साथी को कोई मराठा वोट नहीं देगा। ( बैठता है। ताली बजती है। )

वर्किंग बाक्सवाला—( खड़े होकर ) तो आप सबकूँ ये रिज़ोल्यूशन मंज़ूर है ?

ज़ोर की आवाजें—मंज़ूर है, मंज़ूर है।

वर्किंग बाक्सवाला—अब ये मिटिंग ख़तम होता है।

[ लोग उठते हैं, परदा गिरता है। ]

## पाँचवाँ दृश्य

**स्थान**—सेवाकुटी के बाहर का मैदान ।

**समय**—संध्या ।

[ दीनानाथ और कमला का प्रवेश । ]

कमला—( चारों ओर देखकर ) तो इन संस्थाओं के लिए वे इमारतें कुटी के दोनों ओर बनेंगी ?

दीनानाथ—हाँ, कमला, दोनों ओर ।

कमला—कितने दिन में बन जायँगी ?

दीनानाथ—शीघ्र ही, कमला, कुछ बहुत बड़ी तो बनना नहीं है । अब संस्थाओं का काम फुटफैल स्थानों पर किराये के मकानों से नहीं चलता, इसी लिए छोटे-छोटे मकान बनवा देना है । इस निर्धन देश में इतना धन ही कहाँ है, जो संस्थाओं की भी बड़ी-बड़ी इमारतों में व्यय किया जाय ।

कमला—और कुटी ऐसी ही रहेगी ?

दीनानाथ—कुटी के परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है । हम लोगों का काम इतने में अच्छी प्रकार चल जाता है ।

कमला—पर वे बच्चे जो बड़े हो रहे हैं, उनका विवाह आदि भी तो होगा या नहीं ?

दीनानाथ—यह उनकी इच्छा पर निर्भर है । फिर जब वे विवाह करेंगे तो स्वयं अपना प्रबंध सोचेंगे, हमें उसकी चिंता की क्या आवश्यकता है ?

कमला—परंतु……

[ दो युवकों का प्रवेश ]

एक युवक—( दीनानाथ से ) चुनाव में शक्तिपाल और उसका साम्यवादी दल हार गया।

दीनानाथ—वह तो भासता ही था, क्योंकि कई प्रभावशाली व्यक्ति तो इस बार उनके दल की ओर से खड़े ही नहीं हुए थे।

दूसरा युवक—उनके दल को लोगों ने धोखा भी दिया। उनकी मोटरों में बैठ-बैठकर गये, पर वोट उनके दल के उम्मीदवारों को नहीं दिये।

दीनानाथ—तो शक्तिपाल का साम्यवाद समाप्त हो गया? मैंने उनसे कहा था कि इस देश में इस समय साम्यवाद इस प्रकार स्थापित नहीं हो सकता, परंतु ( कुछ ठहरकर ) ठहरो-ठहरो, कमला, तुमने देखा मेरे हृदय का स्वार्थ? पहचाना इस स्वार्थ को? स्वार्थ! ओह! ( सिर हिलाकर ) यह स्वार्थ बड़ी अद्भुत वस्तु है।

कमला—(आश्चर्य से) इसमें आपका क्या स्वार्थ हो सकता है?

दीनानाथ—कमला, तुम अब तक नहीं समझतीं, अब तक नहीं। ( एक युवक से ) तुमने इस स्वार्थ को पहचाना?

युवक—( कुछ सोचकर ) जी, मुझे भी कुछ ज्ञात नहीं होता।

दीनानाथ—( दूसरे युवक से ) तुमने पहचाना?

युवक—( कुछ सोचते हुए ) जी, मेरी समझ में भी नहीं आता।

दीनानाथ—सुनो, मुझे शक्तिपाल और उसके दल की हार से हर्ष हुआ है। मैं तो चुनाव में खड़ा नहीं हुआ था, न मेरा कोई दल ही था, तुम कहोगे, मेरा प्रत्यक्ष तो कोई स्वार्थ नहीं था।

एक युवक—अवश्य पिताजी।

दूसरा युवक—निःसंदेह।

दीनानाथ—ठीक है, पर इसमें मेरा सूक्ष्म स्वार्थ था और उसका एक आधार है। जब शक्तिपाल एल्-एल्० बी० पास हुए थे, उस समय इस बात पर वाद-विवाद हो गया था कि मुझे क्या करना चाहिए। शक्तिपाल ने मेरे इस त्यागपूर्ण दीनसेवा के सेवा-पथ को निरर्थक बता, राजनीतिक सत्ता द्वारा साम्यवाद की स्थापना करना अपना सेवा-पथ बताया था। उनका मत था कि व्यक्तिगत स्वार्थ-त्याग-पूर्ण जीवन और दीनों की सेवा से कुछ नहीं हो सकता, और मेरा मत था कि हर बात के लिए सबसे पहले व्यक्तिगत जीवन के स्वार्थत्यागपूर्ण होने एवं जब तक दीन-दुखी हैं तब तक उनकी सेवा करने की आवश्यकता है। आज जब शक्तिपाल और उनका दल हार गया, तब मुझे इसलिए हर्ष हुआ कि एक प्रकार से उनका मत हारा। विषय-वासनाओं के त्याग के पश्चात् अपनी अकीर्ति सुनकर मुझे दुःख हुआ था, क्योंकि कीर्ति सुनने का मेरा स्वार्थ मेरे हृदय में शेष था। अब अपने विरुद्ध मत की हार सुन मुझे हर्ष हुआ है, क्योंकि मेरा मत ही सर्वोत्तम सिद्ध हो, इसका मुझे स्वार्थ है।

एक युवक—परंतु, पिताजी, अपने मत को सर्वोच्च सिद्ध करने का यत्न किये बिना, उस मत के द्वारा संसार की सेवा कैसे हो सकती है ?

दीनानाथ—अपने मत के प्रचार का प्रत्येक को अधिकार है,

पर दूसरे का मत मेरे मत से नीचा है और दूसरे के मत की हार होकर मेरे मत की विजय हो, यह प्रवृत्ति उस मत में आसक्ति है। संसार, उसके सम्मुख सर्वोत्तम मत आते ही स्वयं उसे ग्रहण कर लेता है। तुम लोगों को ये बातें बहुत छोटी-छोटी मालूम होती होंगी, पर हृदय की ये छोटी-छोटी प्रवृत्तियाँ यथार्थ में बहुत बड़ी शक्तियाँ हैं। इनके अव्यक्त रहने के कारण ये स्थूल दृष्टि से महत्त्व की नहीं देख पड़तीं, पर संसार में विद्युत्, वाष्प आदि अव्यक्त शक्तियों के समान ही ये भी बड़ी ही प्रबल होती हैं। यह स्वार्थ बड़ी सूक्ष्म, प्रबल और अव्यक्त शक्ति है। अब तक मैं स्वार्थ पर विजय प्राप्त नहीं कर सका हूँ, अभी तक यह परास्त नहीं हुआ है। न-जाने इस पथ में अभी तक कितनी सीढ़ियाँ शेष हैं; न-जाने अभी मुझे कितनी परीक्षाएँ और देनी हैं। हाँ इतना आवश्य है कि यात्रा लंबी उसे ही जान पड़ती है, जो थक गया हो। मैं अपनी यात्रा से अभी थोड़ा भी थकित नहीं हुआ हूँ, थोड़ा भी नहीं।

दूसरा युवक—पिताजी, जैसे आप हो गये हैं, वैसे हो जाने पर भी आप सदा अपने में दोष ही देखा करते हैं।

दीनानाथ—( कुछ सोचते हुए ) हाँ, क्योंकि मैं सबसे बड़ा दोष अपने में दोष न देखने को समझता हूँ।

[ यवनिका पतन ]

---

# तीसरा अंक

## पहला दृश्य

**स्थान**—सेवा-कुटी के बाहर का मैदान

**समय**—तीसरा पहर

[ अब मैदान खाली नहीं है। बीच में दूर पर तो पहलेवाली कुटी ही दीखती है, पर उसके दोनों ओर छोटी-छोटी इमारतें बन गई हैं। उन पर 'बाल-समाज', 'युवक-संघ', 'छात्रावास', 'रात्रि-पाठशाला' 'कृषक-पत्र', 'कृषक-प्रेस', 'अनाथाश्रम', 'व्यायामशाला', 'औषधालय' 'सेवा-संघ ', के साइनबोर्ड लगे हैं। कमला और सरला बीच के मैदान में बैठी हुई चरखा चला रही है। ]

सरला—**कमला, आज मुझे तीन वर्ष पूर्व की एक बात स्मरण आ रही है। तुमने इसी स्थान पर एक दिन क्या कहा था, याद है।**

कमला—( कुछ सोचते हुए ) **नहीं बहन, मुझे तो कुछ स्मरण नहीं आता।**

सरला—**तुम्हारे वाक्य मैंने कंठस्थ कर लिये थे और मुझे वैसे-के- वैसे याद हैं। तुमने कहा था—नरक का कीड़ा नरक में रहते-**

रहते उसमें भी सुख मानने लगता है, वहीं के जीवों के समान आचरण भी करने लगता है।

कमला—( सिर नीचाकर ) हाँ-हाँ, स्मरण आ गया। मैं महा-मूर्खा थी सरला, क्या कहूँ।

सरला—और भी तुमने एक बात कही थी और मैंने भी उस पर कुछ कहा था, वह भी तुम्हें याद है ?

कमला—अब तो स्मरण हो आया। मैंने बच्चे के संबंध में कहा था कि उसके कार्यों का मेरे मन पर अभी से प्रभाव पड़ रहा है, और तुमने कहा था कि यह बालक तुम्हारे इस नरक को स्वर्ग में परिणत करके रहेगा ?

सरला—अब कहो, मैंने कहा था वही हुआ या नहीं ?

कमला—हाँ बहन, अक्षरशः वही हुआ।

सरला—जिस बालक और बालिका को तुम मिठाई खिलाना, अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनाना और मोटर पर बिठा कर घुमाना चाहती थीं, देखो वे कैसे निकले ?

कमला—( फिर सिर नीचा करके ) क्या कहूँ, मूर्खता की सीमा थी।

सरला—बहन, बात यह है कि मनुष्य-जीवन को यदि पर्वत की उपमा दी जाय तो विषय-वासना इसकी तराई और शांति इसका शिखर है।

कमला—अच्छा।

सरला—निम्नतम जीवन का आधार विषयवासनारूपी तराई

और उच्चतम जीवन का आधार शांतिरूपी शिखर है। एक का कर्म भोगविलास है और दूसरे का नियम और सिद्धांत। एक का फल क्षणिक सुख है और दूसरे का स्थायी।

कमला—अच्छा !

सरला—इस शांति के शिखर पर पहुँचने के लिए बड़े बीहड़ और सँकरे पथ से अत्यंत श्रमपूर्वक चलना पड़ता है।

कमला—यह क्यों होना चाहिए ?

सरला—क्योंकि हर वस्तु की प्राप्ति के लिए श्रम ईश्वरी नियम है, वरन् वही प्राप्ति का साधन है।

कमला—अच्छा।

सरला—जब साधारण वस्तुओं की प्राप्ति भी बिना श्रम के नहीं होती, तब उच्चतम वस्तु के लिए तो वैसे ही श्रम की भी आवश्यकता है, अतः इस पथ पर चलने में जो श्रम होता है, उससे पग-पग पर मानसिक निर्बलता, दिशा-भ्रम और तराई को ही लौटने की इच्छा होती है, और जब तक इस निर्बलता को खोने का मनुष्य फिर-फिर के अविराम श्रम नहीं करता, तब तक उसे मानसिक शक्ति प्रदान नहीं होती ; जब तक वह ज्ञानरूपी ज्योति से इस मार्ग का लगातार अनुसंधान नहीं करता, तब तक आगे बढ़ नहीं सकता और इसी प्रकार जब तक तराई में प्राप्त होनेवाली विषयवासनाओं की दासता रहती है, तब तक शांति के शिखर पर पहुँचकर स्वतंत्रता और सुख का उपभोग नहीं कर सकता। तुम अपने बच्चों को तराई में रखना चाहती थीं, पर जो इस शांति के शिखर पर बैठे थे, वे कैसे

उन्हें वहाँ रहने देते ? पहले बच्चे खिंचे और अंत में बच्चों ने माता को भी उसी पथ पर खींच लिया।

कमला—ठीक कहती हो, सरला।

सरला—बहन, तुम्हारे पति उन व्यक्तियों में हैं, जिन्हें सत्य आचरण से सुख मिलने लगा है। संसार में बहुत थोड़े व्यक्ति श्रमकर सत्य को जानते हैं। सत्य को जानने की अपेक्षा उस पर प्रेम करना और उस पर प्रेम करने की अपेक्षा उसे व्यवहार में लाकर उस व्यवहार में ही सच्चा सुख प्राप्त करना विरले मनुष्यों के ही भाग्य में रहता है। बहन, तुम्हारे पति का-सा सौभाग्य बहुत थोड़े सौभाग्यशालियों का होता है।

[कुछ देर दोनों चुप रह चरखा चलाती-चलाती इधर-उधर देखती हैं।]

सरला—क्यों, कमला, एक बात बताओगी ?

कमला—पूछो, बहन।

सरला—चारों ओर के इन गृहों में जो संस्थाएँ हैं इनमें, और देश में जो इसी प्रकार की अन्य संस्थाएँ हैं उनमें, क्या अंतर है ?

कमला—( कुछ सोचकर ) क्या अंतर है, बहन, कुछ तो नहीं जान पड़ता।

सरला—वरन् देश की अधिकांश संस्थाएँ इन संस्थाओं से कहीं बड़ी हैं।

कमला—हाँ !

सरला—उन बड़ी-बड़ी संस्थाओं और इनमें दो महान् अंतर

हैं। ये अंतर पहले मेरी समझ में नहीं आते थे, पर अब धीरे-धीरे आपसे आप वे मुझे दिखाई देने लगे हैं।

कमला—( उत्सुकता से ) वे क्या हैं, सरला ?

सरला—एक तो इन संस्थाओं के पीछे जो त्याग-पूर्ण हृदय है, इनके पीछे इनके संस्थापक का जो आदर्श और जाज्वल्यमान उच्च चरित्र है, जो हृदय इन संस्थाओं का जीवन-प्राण है और जिस पवित्र चरित्र से ये शासित होती हैं, वह उन बड़ी-बड़ी संस्थाओं में कहाँ ? दूसरे, बहन, ये संस्थाएँ केवल श्रीमानों के दान से नहीं चलतीं, वरन् चारों ओर के निर्धन कृषक और मज़दूर अपने रक्त का पानी कर जो आय करते हैं, प्रधानतः उस दान से चलती हैं। वे इनके लाभों से परिचित हो गये हैं, अतः वे अपनी थोड़ी-सी आय में से भी कौड़ी-कौड़ी जोड़ कर सहर्ष इनके लिए आप से आप धन देते हैं और इन्हें अपनी समझते हैं।

कमला—हाँ, बहन, ये दो अंतर तो अवश्य हैं, और सच्चे अंतर हैं।

सरला—तुम्हारे पति ने क्या-क्या कर डाला है कमला ? महात्मा गांधी का कोई भी शिष्य यह न कर सका, जो उनके इस शिष्य ने किया है। इन संस्थाओं को स्थापित किया है यही नहीं, यह तो उनका छोटे-से-छोटा कार्य है, स्वार्थ-त्याग के पथ में उन्होंने जो महान् लोकमत तैयार किया है, वह देखो।

कमला—तो संस्थाओं से लोकमत बड़ी वस्तु है ?

सरला—इसमें क्या संदेह है, उस लोकमत से ऐसी संस्थाएँ तो

न-जाने कितनी हो जायँगी। देखती नहीं, उनके आदर्श चरित्र और उपदेश के कारण जनता के हृदय पर कैसा अद्भुत प्रभाव पड़ा है। कितने लोग एक दूसरे के लिए त्याग करने में अपना गौरव समझने लगे हैं। जो स्वार्थ को नहीं छोड़ते, वे नीची दृष्टि से देखे जाते हैं, यद्यपि उनका यही उपदेश है कि सबको समानता और प्रेम से देखो। एक दूसरे से प्रेम करने की प्रवृत्ति कितनी बढ़ गई है। पतित कार्यों से दूर रहने की कांक्षा की कितनी उत्पत्ति हुई है। ज़मींदारी रहते हुए भी अधिकांश ज़मींदारों के हृदय में ऐसा परिवर्तन हो गया है कि उन्हें स्वयं किसानों की कमाई खाने में लज्जा आती है, वे उसे उन्हीं के हित के लिए दान कर देते हैं। अधिकांश महाजन व्याज खाने में सकुचाते हैं।

कमला—हाँ, हुआ तो यही है।

सरला—फिर केवल आत्मिक और मानसिक उन्नति हुई है, इतना ही नहीं, इसके कारण आधिभौतिक उन्नति भी हुई है, क्योंकि लोगों के आपसी कलह की कमी के कारण धन बचता है और आपसी सहयोग है; कर्मण्य होने एवं आलस्य के नष्ट होने से समय बचता है और उसका सदुपयोग होता है। ग्राम कैसे साफ़-सुथरे रहते हैं; नये आविष्कारों के उपयोग से कृषि की कितनी आय बढ़ गई है। सभी गाँवों में पाठशालाएँ आदि आवश्यक संस्थाएँ स्थापित हो गई हैं। भविष्य में ये बातें रह सकें, इसके लिए ऐसी शिक्षा दी जाती है कि बालकों का हृदय आरंभ से ही इसी प्रकार का बने। बहन, साम्यवाद की तो यहाँ पूरी-पूरी व्यवस्था हो रही है और

उसमें जो आत्मोन्नति की कमी है, स्वार्थ-त्याग के सिद्धांत के कारण, उसकी भी यहाँ पूर्ति की जा रही है। सुना है, सरकार को तो भय लग रहा है कि यह क्रांति की तैयारी हो रही है।

कमला—( आश्चर्य से ) अच्छा !

सरला—फिर इन ग्रामों का प्रभाव कितनी दूर-दूर तक पड़ा है।

कमला—हाँ बहन, कृषक-पत्र में निकलता ही रहता है कि इस आदर्श पर देश में कई स्थानों में ग्राम-संघटन हो रहा है।

सरला—और अभी तो और न-जाने कितने स्थानों पर होगा।

कमला—( कुछ ठहरकर ) तुम आरंभ से ही दूरदर्शी थीं बहन, और मैं थी महामूर्खा। अभी भी मैं अपनी मूर्खता का स्मरण कर लज्जा से गड़ जाती हूँ।

सरला—तुम्हें लज्जा ! कमला, तुम्हें लज्जा ! जिसे ऐसा पति प्राप्त हुआ हो, उसे लज्जा ! हाँ, तुमने आरंभ में इस पारस को पहचाना अवश्य नहीं था। एक व्यक्ति ने क्या कर डाला। यथार्थ में संसार का इतिहास कुछ व्यक्तियों का ही इतिहास तो है। मनुष्य-जीवन की आधिभौतिक दृष्टि से मैंने अभी पर्वत के साथ तुलना कर तुम्हें एक रूपक सुनाया था। अब तुम्हारे पति का स्मरण कर आध्यात्मिक दृष्टि से एक रूपक की कल्पना उठ रही है।

कमला—वह भी सुनाओ बहन, वह भी अद्भुत ही होगा।

सरला—बहन, तुम्हारे पति माया के प्रतिद्वंद्विता जगत् से ईश्वरीय शांतिलोक में पहुँच गये हैं।

कमला—अच्छा।

सरला—इस लोक की यात्रा उन्होंने मन, वचन और कार्य के संयोग से अपने आप को वश में रख, दैहिक और मानसिक पवित्रता एवं निष्काम प्रेम सहित, सेवा के मार्ग द्वारा की है। दूसरों के उद्धार का प्रयत्न करते-करते उनका स्वयं का उद्धार आप-से-आप हो गया है, उसके लिए सोचने का भी स्वार्थ उन्हें नहीं रखना पड़ा। इस मार्ग में चलते हुए उन्होंने अपने और अपने कुटुंब के आधिभौतिक सुखरूपी कंटकों को चूर्ण किया है। समाज की आलोचना, हँसी और निंदा-रूपी दीवालों का लंघन किया है। इस यात्रा के लिए बिदा के समय वे अकेले थे......

कमला—इस में कोई संदेह नहीं बिलकुल अकेले थे। कई बार स्वयं कहते थे कि इस पथ में कोई भी मेरा साथी पथिक नहीं।

सरला—पर उन्हीं अकेले को, जिनकी सेवा वे करना चाहते थे, उनमें प्रेम के कारण अपना ही रूप दिखाई देने लगा और इस प्रकार उन्होंने पहचान लिया कि मुझमें और सारी सृष्टि में उसी एक ईश्वर का निवास है, जिसके ज्ञान के पश्चात् कोई कभी अकेलेपन का अनुभव ही नहीं कर सकता।

कमला—क्या विशद कल्पना है!

सरला—यही जीवन-मुक्त की अवस्था है, बहन, यही शांति का लोक है; इस लोक की चारों दिशाएँ प्रेम हैं, जो सत्य के चँदवे से ढकी हैं; दृढ़ता इस लोक की पृथ्वी है; निःस्वार्थ सेवा की यहाँ पवन चल रही है और सच्चे एवं स्थायी सुख का गान हो रहा है।

कमला—बहन सरला, तुम सचमुच में धन्य हो और धन्य हैं तुम्हारी ये अद्भुत कल्पनाएँ !

सरला—बहन, सच तो यह है कि संसार में महान् पथ एक ही है, वह सीधा और सरल है, परंतु यह माया का खेल है कि एक सीधे और सरल पथ की अपेक्षा लोगों को टेढ़ी-मेढ़ी गलियाँ ही अधिक आकर्षक जान पड़ती हैं ।

[ कुछ देर तक चुप होकर दोनों चरखा चलाती हैं ]

कमला—क्यों, बहन, अब श्रीनिवासजी का क्या हाल है ?

सरला—( लंबी साँस लेकर ) और भी बुरा, कमला ।

कमला—कैसा ?

सरला—तुम यह तो जानती ही हो कि अब हमारे घर की संपत्ति प्रायः नष्ट हो चुकी है । रुपया कमाना तो सुई से खोद कर पानी निकालने के समान कार्य है, और ख़र्च करना उस पानी को बालू पर डालने के तुल्य । घर की संपत्ति नष्ट हुई हो इतना ही नहीं, कर्ज़ इतना बढ़ गया है कि बची हुई जायदाद, यहाँ तक कि रहने का मकान भी नीलाम होनेवाला है, नौकरों-चाकरों को भी महीनों तक वेतन न मिलने से कई चले गये हैं ।

कमला—हाँ, यह तो छिपी हुई बात नहीं है; सभी जानते हैं ।

सरला—इतने पर भी उस मार्गरेट का और उनका साथ है ही ।

कमला—वह भी जानती हूँ ।

सरला—उस मार्गरेट के ख़र्च की दशा भी तुमसे छिपी नहीं है ।

कमला—मुझसे क्या, किसी से भी छिपी नहीं है ।

सरला—जब तक शक्तिपालजी मिनिस्टर थे, तब तक उनके वेतन से भी उसका खर्च चलता था, पर अब सारा भार उन्हीं पर है। उनके पास रुपया नहीं, क़र्ज़ भी अब तो नहीं मिलता, अतः उनके और मार्गरेट के भी झगड़े होने लगे हैं।

कमला—( आश्चर्य से ) अच्छा !

सरला—क्या पूछती हो, सदा ही झगड़ा मचा रहता है। अब तक जिसे वे सुख मानते थे, वह सुख उन्हें तो कम-से-कम प्राप्त था, पर अब तो इन झगड़ों के कारण उनकी भी बुरी दशा है। क्षण-क्षण पर झुँझलाते हैं। इस झुँझलाहट को मिटाने के लिए मदिरा-पान बढ़ा है और उससे झुँझलाहट कम होने की अपेक्षा उलटी बढ़ गई है। कभी-कभी झुँझलाहट न-जाने कहाँ चली जाती है और वे चुपचाप बैठे-बैठे ऊँघते-से रहते हैं। जान पड़ता है, व्यथा के भार से वे ऊँघ रहे हैं। उस ऊँघने की अवस्था में उनके हृदय की आंतरिक व्यथा का एक कारुणिक दृश्य दिखाई देता है। ( लंबी साँस लेकर ) कमला, अब तक मैं अपने ही दुःख से दुखी थी, पर अब उनका भी दुःख व्यथित किये डालता है।

कमला—सचमुच, बहन, तुम्हारा दुःख देख कलेजा मुँह को आता है।

सरला—तुम्हीं देख लो। तुम्हें श्रीमानों का जीवन बड़ा प्रिय था। ( कुछ रुककर ) फिर एक और आपत्ति है।

कमला—वह क्या ?

सरला—शक्तिपालजी को भी यह सब वृत्तांत मालूम हो गया

है। उनका स्वभाव तो तुम जानती ही हो। पश्चिमी विचारों के मनुष्य हैं। न-जाने वे किस दिन क्या कर बैठें। सुना है, वे तो शक्तिपालजी से मिलने तक में डरते हैं। इसका प्रबंध कर रक्खा है कि शक्तिपालजी हमारे घर में न आने पावें और वह मार्गरेट शक्तिपालजी से लड़-झगड़कर उनका घर छोड़कर भाग गई है।

कमला—( घबराहट से ) यह तो बड़ी भयानक बात है।

सरला—इसमें क्या कुछ संदेह है ? ( लंबी साँस लेती है। )

कमला—फिर, बहन, क्या किया जाय ?

सरला—क्या किया जा सकता है, जो कुछ भाग्य में होगा, वह होकर रहेगा। ऐसे ही अवसरों पर तो मनुष्य को भाग्य का आश्रय ग्रहण करना पड़ता है।

कमला—यदि उन्हें श्रीनिवासजी को समझाने के लिए भेजा जाय तो ?

सरला—उससे क्या होगा, कमला, उन्हें अब अपनी कृतियों से स्वयं दुःख हो रहा है। परन्तु वे इतनी दूर तक आगे बढ़ गये हैं कि अब दुःख पाने पर भी अपने को रोक सकने की उनमें शक्ति नहीं रह गई है। बुरी दिशा में पैर रखने के पश्चात् उससे बचने का निर्णय कदाचित् तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि उस निर्णय को कार्यरूप में परिणत करना ही असंभव न हो जाय।

कमला—फिर भी एक बार उन्हें भेजकर देखना तो चाहिए।

सरला—हाँ, हानि कोई नहीं है।

कमला—( जेब से एक चाँदी की घड़ी निकालकर देखते हुए )

उनके आने का समय भी हो रहा है। वे तो ठीक समय पर आ ही जावेंगे। आज ही उन्हें भेजूँगी।

[ दोनों फिर चुप हो चरखा चलाने लगती हैं। परदा गिरता है। ]

---

## दूसरा दृश्य

**स्थान**—श्रीनिवास के मकान का दालान।

**समय**—तीसरा पहर।

[ मार्गरेट का हाथ में बैग लिये हुए शीघ्रता से प्रवेश। ]

मार्गरेट—( ज़ोर से ) **चपरासी! चपरासी!**

[ चपरासी का प्रवेश। वह सलाम करता है। ]

मार्गरेट—**मिस्टर शीनिवैश साब कहाँ पर है?**

चपरासी—**हुजूर, उनकी तबियत अच्छी नहीं है। वे सोने के कमरे में हैं।**

मार्गरेट—**अच्चा, टुम उनको इटला कर डो कि हम आया ठा। एक काम को जाकर फिर अबी आटा।**

चपरासी—**जो हुक्म सरकार।**

मार्गरेट का शीघ्रता से एक ओर तथा चपरासी का दूसरी ओर प्रस्थान। परदा उठता है। ]

---

## तीसरा दृश्य

**स्थान**—श्रीनिवास का सोने का कमरा।

**समय**—तीसरा पहर।

[ कमरे के तीन ओर दीवालें हैं जो हरे तैल रंग से रँगी हुई हैं, जिस पर बेल-बूटे हैं। तीनों दीवालों में कई दरवाजे और खिड़कियाँ हैं, जिनके किवाड़ों में काँच लगे हैं। कुछ दरवाजे और खिड़कियाँ खुले हैं और कुछ बंद। खुले हुए दरवाजे और खिड़कियों से पहाड़ियों के शिखर और आकाश दिखाई देता है, जिससे जान पड़ता है कि कमरा दुमंजले पर है। पहाड़ियाँ और आकाश सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हैं। कमरे के बीच में दो खंभों पर डाट है। ज़मीन पर क़ालीन बिछा है और छत से बिजली की बत्तियाँ तथा सीलिंग फैन भूल रहे हैं। एक ओर पीतल का पलँग है, जिस पर मच्छरदानी पड़ी है। पलँग के पास ही खूँटियों का एक स्टैंड है, जिस पर तौलिया और कपड़े टँगे हैं। दूसरी तरफ एक गद्दीदार सोफा और दो आरामकुर्सियाँ हैं। सोफा के सामने एक टेबल है। बीच में एक शीशे के दरवाजे की आलमारी है। उसी के निकट एक सिंगारमेज़ ( ड्रेसिंग टेबल ) रक्खी है, जिसमें काँच लगा है। उस टेबल के सामने एक कुर्सी है। श्रीनिवास ढीला कुरता और पाजामा तथा स्लीपर पहने हुए सोफा

पर बैठा है। कपड़े कुछ मैले हैं। सामने की टेबल पर हाथ की कोहनियाँ टिकाये हाथ पर मुख रक्खे है। आँखें बंद हैं और वह बैठे-बैठे ऊँघ-सा रहा है। उसका शरीर और मुख कृश है तथा मुख पर अत्यधिक व्यथा दृष्टिगोचर है। हजामत बढ़ गई है। बाल फैले हुए हैं। टेबल पर शराब की बोतल और ग्लास भी रक्खा हुआ है। चपरासी का प्रवेश। ]

चपरासी—**हुजूर, मिसेज़ वर्मा साहबा अभी तशरीफ़ लाई थीं।**

श्रीनिवास—( चौंककर ) **क्या ?**

चपरासी—**मिसेज़ वर्मा साहबा आई थीं।**

[ श्रीनिवास कुछ न कह केवल चपरासी की ओर देखता है ]

चपरासी—**सरकार से इत्तिला करने को कह गई हैं कि एक काम के लिए जा रही हैं। अभी हुजूर से आकर मिलेंगी।**

[ श्रीनिवास कुछ नहीं बोलता और मुख दूसरी ओर कर लेता है। चपरासी का प्रस्थान। चपरासी के जाने के पश्चात् श्रीनिवास सिर को और झुकाकर हाथों से मुख ढाँक लेता है। कुछ देर के पश्चात् खाँसता है और सिर खुजाता है। फिर बोतल से शराब ग्लास में उँडेल-कर पीता और खाँसता है। फिर सिर को टेबल पर रख लेता है। कुछ देर में एकाएक सिर उठा भृकुटी चढ़ा दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँध टेबल को ठोकता है और कहता है—'मार्गरेट मार्गरेट'। एकाएक खड़ा होकर कमरे में जल्दी-जल्दी टहलने लगता है। टहलते-टहलते खड़ा हो जाता है और ओठों को दाँतों से चबाकर पृथ्वी को दाहिने पैर से ठोकता है। कुछ देर को खड़ा हो चुपचाप एक ओर देखता है और

एक लंबी साँस लेकर खाँसता है। फिर टहलने लगता है। टहलते-टहलते आलमारी के शीशे के सामने एकाएक खड़े हो चेहरा देखता है। फिर वहाँ से हटकर अपने पहने हुए कपड़े देखता और जोर से क़हक़हा लगाकर हँस देता है। एकाएक सिंगारमेज के सामने जाकर कुर्सी पर बैठ उसकी दराज खोल हजामत बनाने का संदूक ( शेविंग बॉक्स ) निकाल ब्रश से साबुन लगा सेफ्टी रेज़र से हजामत बनाना आरंभ करता और खाँसता है, पर रुक जाता है। संदूक़ में कुछ ढूँढने लगता है। और एकाएक 'ब्लेड भी नहीं' कहकर संदूक को फेंक देता है। खूँटी के स्टैंड से एक तौलिया लेकर फिर उसी कुर्सी पर बैठ जाता है। तौलिया से मुँह का लगा हुआ साबुन पोंछ डालता है। मेज की दूसरी दराज खोलता है, उसमें से कंघा, ब्रश और काग़ज़ से मढ़ी हुई एक शीशी निकालता है। शीशी का कार्क खोल उसे हाथ पर धीरे-धीरे उँडेलता है और खाँसता है। पूरी शीशी उलटी कर देने पर भी उससे कुछ नहीं निकलता। चिल्लाकर 'ओह' कह शीशी फेंकता है, वह चूर-चूर हो जाती है। वहाँ से उठकर सोफा पर बैठ शराब को ग्लास में उँडेल पीता और खाँसता है। फिर हाथ मलने लगता है। एकाएक वहाँ से उठ आलमारी के निकट जाता और उसे खोल एक क़मीज़ निकालता है। कुरता उतार क़मीज की एक बाँह में हाथ डालता है। मार्गरेट का चपरासी के साथ प्रवेश। मार्गरेट को देख जल्दी से क़मीज पहन बटन लगाते हुए श्रीनिवास उसकी ओर बढ़ता है और कुछ आगे बढ़ खड़ा हो जाता है। मार्गरेट खड़ी हो श्रीनिवास को सिर से पैर तक घूरकर देखती है। श्रीनिवास भी वैसा ही खड़ा-खड़ा मार्गरेट की ओर

देखता है। कुछ नहीं बोलता। फिर श्रीनिवास खाँसता है। चपरासी एक ओर हटकर मार्ग में छिपकर खड़ा हो जाता है।]

मार्गरेट—ओ हाउ स्लवनली यू लुक मिस्टर शीनिवैश।

श्रीनिवास—( घृणा से मुसकराकर ) हाँ, अब मेरा मैलापन तो तुमको और भी अधिक दिखेगा, मिसेज़ वर्मा।

मार्गरेट—( आगे बढ़कर सोफ़ा पर बैठते हुए ) टुम नेई जानटा, मिस्टर शीनिवैश, कि लेडीज़ को कोई जेंटलमैन इस टरा अपना अनशेव्ड सूरट नेई डिखायगा।

श्रीनिवास—(पास की आरामकुर्सी पर बैठते हुए लंबी साँस लेकर ) पर मैं तो अब जेंटलमैन रहा ही नहीं, मिसेज़ वर्मा!

मार्गरेट—हाँ, हमको बी मालूम टो ऐसा ही होटा।

श्रीनिवास—क्यों न हो, मिसेज़ वर्मा, किसी देश की एक कहावत मुझे याद है कि जब ग़रीबी दरवाज़े से आती है, तब प्रेम खिड़की से भाग जाता है। तुम्हारे मत में जेंटलमैन का जो पहला और अंतिम गुण रुपया है ( खाँसकर ) वह अब मेरे पास कहाँ है?

मार्गरेट—नेई रुपया को हम जेंटलमैन का फ़र्स्ट और लास्ट क्वालिफ़िकेशन नेई मानटा। कल्चर ऐंड रिफ़ाइनमेंट बी टो कोई चीज़ है।

श्रीनिवास—और जिन्हें तुम कल्चर और रिफ़ाइनमेंट कहती हो, वे रुपया के बिना क़ायम नहीं रक्खे जा सकते। ( खाँसता है ) अतः रुपया नहीं तो तुम्हें उन वस्तुओं से प्रेम है, जो रुपये बिना नहीं आ सकतीं।

मार्गरेट—खैर जाने डो इस झगरे को, इस वक्ट टो हम टुमारा पास इसलिए आया कि व्हाइट वे लैडला का वह सिक्सटीन हंड्रेड ऐंड ट्वंटी टू रूपीज़ का बिल का डेट आज खटम होता, उसको आज रुपया डेना ई होगा।

श्रीनिवास—( घृणा से हँसकर ) मेरे पास तो इस वक्त सोलह रुपये भी नहीं हैं, सोलह सौ तो दूर की बात है।

मार्गरेट—( क्रोध से ) टो हम क्या करेगा ? हमारा इज्जट जायगा।

श्रीनिवास—मेरी ही इज़्ज़त जा रही है, मिसेज़ वर्मा, (खाँसकर) मैं तुम्हारी इज़्ज़त कहाँ तक बचाऊँ।

मार्गरेट—( अत्यंत क्रोध से ) यू मे बैग, बारो और स्टील, पर हमको टो ये रुपया डेना ई होगा।

श्रीनिवास—( कुर्सी पर टिकते हुए ) क़र्ज़ मुझे अब मिलता नहीं, भीख माँगने से इतना कभी न मिलेगा, यह मैं जानता हूँ, और चोरी करना मैंने सीखा नहीं।

मार्गरेट—( चिल्लाकर ) फिर यह झगरा किस टरा मिटेगा; अबी टो केई बिल पेमेंट होना बाक़ी है।

[ शीघ्रता से शक्तिपाल का प्रवेश। शक्तिपाल को देख चपरासी चौंक-सा पड़ता है, पर वहीं दबककर खड़ा रहता है। ]

शक्तिपाल—( क्रोध से ) मैं अभी झगड़ा मिटाये देता हूँ। बड़ी मुश्किल से दोनों को इकट्ठा पाया है। दोनों एडल्ट्री और फ़ेथलेसनेस का नतीजा भोगो।

[ शक्तिपाल की बोली सुन और उसे देखकर श्रीनिवास और मार्गरेट दोनों चौंककर खड़े होते हैं और काँपते हुए भागने पर उद्यत होते हैं। ]

शक्तिपाल—( जेब से पिस्तौल निकालते हुए गरजकर जल्दी से ) **ख़बरदार ! अगर भागे। बदमाशो ! तुम अब बच नहीं सकते।**

[ शक्तिपाल मार्गरेट पर पिस्तौल चलाता है। गोली चूक जाती है। दोनों भागकर कमरे के बीच के दोनों खंभों की आड़ में होते हैं। चपरासी भी भाग जाता है। शक्तिपाल दूसरी गोली मार्गरेट के खंभे की ओर चलाता है, पर वह भी नहीं लगती। दीनानाथ का दौड़ते हुए प्रवेश ]

दीनानाथ—( चिल्लाकर ) **हैं ! हैं ! यह आप क्या कर रहे हैं !**

शक्तिपाल—( चौंककर ) **आप ! पर हट जाइए आप भी, मैं इन दोनों पाजियों को बग़ैर मारे न छोड़ूँगा।**

[ शक्तिपाल श्रीनिवास के खंभे की ओर बढ़ता है। दीनानाथ भी उसी तरफ़। शक्तिपाल श्रीनिवास की ओर लक्ष्य कर पिस्तौल चलाता है। उसी समय दौड़कर बीच में दीनानाथ आ जाता है। गोली श्री-निवास को न लगकर दीनानाथ की जाँघ में लगती है। खून बहने लगता है। वह गिरता है। शक्तिपाल चौंक पड़ता है। उसका मुख देख स्पष्ट जान पड़ता है कि उसका सारा क्रोध ही उड़ गया है। वह दीनानाथ की ओर दौड़ता और पिस्तौल को एक ओर रख उसे सम्हालता है। ]

शक्तिपाल—( भर्राये हुए स्वर में ) **हैं ! यह मेरे हाथ से क्या हुआ ! जिसकी मैं इतनी इज़्ज़त करता हूँ, वह मेरे हाथ से. . .हाय !**

मार्गरेट—( खंभे की आड़ में से निकल भागते हुए ) डेम यू आल !

[ मार्गरेट भाग जाती है। श्रीनिवास काँपते हुए खंभे की आड़ से थोड़ा-सा सिर निकाल शक्तिपाल और दीनानाथ की ओर देखता है और खाँसता है। ]

दीनानाथ—आप चिंतित न होइए, शक्तिपालजी, मैं मरूँगा नहीं; गोली जाँघ में लगी है।

शक्तिपाल—( दौड़कर तौलिया लाते हुए ) लेकिन, दीनानाथजी, मेरे हाथ से इतना बड़ा पाप हुआ कि इसका कोई प्रायश्चित भी नहीं है।

दीनानाथ—है, शक्तिपालजी, क्या आप उसे करेंगे ?

शक्तिपाल—( दीनानाथ के पैर में तौलिया बाँधते हुए उत्सुकता से ) हुक्म दीजिए, दीनानाथजी, फ़ौरन् तामील होगी।

दीनानाथ—वचन देते हैं ?

शक्तिपाल—एक दफ़ा नहीं, जितनी दफ़ा आप कहें।

दीनानाथ—आप श्रीनिवासजी और मार्गरेट को क्षमा कर दें।

शक्तिपाल—( आँखों में आँसू भरकर ) ऐसा ही हो।

[ शक्तिपाल पिस्तौल, जो निकट रक्खी थी, उसे उठाकर दूर फेंकता है। श्रीनिवास खंभे की आड़ में से निकल दीनानाथ के पैरों पर गिर पड़ता है। ]

दीनानाथ—यह आप क्या कर रहे हैं, यह आप क्या कर रहे हैं ?

शक्तिपाल—अच्छा, ये बातें फिर होंगी, इस वक्त तो दीनानाथजी को हॉस्पिटल में ले चलना होगा, क्योंकि शायद गोली अंदर हो। सवारी का इंतज़ाम कीजिए।

श्रीनिवास—( जाते हुए ) मैं अभी सवारी मँगवाता हूँ। ( जाता है। )

शक्तिपाल—( कुछ ठहर लंबी साँस लेकर ) दीनानाथजी, मेरे दिल में हमेशा आपकी इज़्ज़त रही है, पर जितनी ज़्यादा वह आज हो गई, उतनी कभी न थी। आज मुझे मालूम हुआ कि आप जिसे अपना सेवा-पथ कहते हैं, वह किस तरह का है और उस पर चलते-चलते आप कैसे हो गये हैं। रुपया ख़त्म होने से उसके ज़रिए की जानेवाली ख़िदमात भी ख़त्म हो सकती हैं। सियासी रास्ते से जो ख़िदमत की जाती है, उसे आज भी मैं ज़रूरी मानता हूँ, पर वह भी बहुत दूर तक दूसरों पर मुनहसिर होने के सबब रुक सकती है। हाँ, जिनकी ख़िदमात सिर्फ़ दिल और बदन के ज़रिए हैं, उनकी ख़िदमात हर वक्त और हर मौक़े पर जारी रह सकती हैं। दीनानाथजी, अगर मैं आज के क़ुसूर में जेल गया, तब तो दूसरी बात है, नहीं तो आज से, जब तक फिर सियासी तरीक़ों से मुल्क की ख़िदमत करने का मौक़ा मुझे नहीं मिलता, तब तक मेरा तमाम वक्त और ताक़त आपके क़ब्ज़े में है। जो हुक्म आप मुझे देंगे, वही मैं करके आज के पाप का प्रायश्चित्त करूँगा।

दीनानाथ—आपके सदृश ईमानदार, सच्चा और कार्यपटु सहायक पाकर आज मैं कृत्यकृत्य हो गया, शक्तिपालजी। मैंने

राजनीतिक सेवा को कभी कम महत्त्व का नहीं समझा, पर जिस पथ पर मैं चल रहा हूँ, उसका सुख ही निराला है, वह जब आप उस पर चलेंगे, तब आपको मालूम होगा। आपका जेल जाना असंभव है, जिस परिस्थिति में आपने गोली चलाई है, उस परिस्थिति में गोली चलाना क़ानूनन भी क्षम्य है।

श्रीनिवास—( प्रवेश कर ) सवारी तैयार है।

शक्तिपाल—स्ट्रेचर मँगाना होगा।

दीनानाथ—( उठते हुए ) नहीं, मैं आप दोनों के सहारे सवारी तक चल सकूँगा।

[ दोनों के सहारे खड़े होने का प्रयत्न करता है। ]

[ यवनिका पतन ]

**समाप्त**

## लेखक की अन्य कृतियाँ

प्रकाश ( सामाजिक नाटक ) १॥)

हर्ष ( ऐतिहासिक नाटक ) १।)

कर्तव्य ( पौराणिक नाटक ) १॥)

स्पर्द्धा ( एकांकी सामाजिक नाटक ) ।=)

नाट्य कला मीमांसा ।)